परमपिता शिव परमात्मा गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 3, सितम्बर 2019, मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

नई दिल्ली : भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति भ्राता वेंकैय्या नायडू जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। साथ में ब्र.कु. पुष्पा बहन।

नई दिल्ली : भारत के माननीय प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। साथ में ब्र.कु. पुष्पा बहन।

1. **लखनऊ** : उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल को राखी बांधती हुई ब्र.कु. राधा बहन। 2. **भुवनेश्वर** : उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल भ्राता गणेशी लाल जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. लीना बहन। 3.**गोहाटी** : आसाम के महामहिम राज्यपाल भ्राता जगदीश मुखी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. शीला बहन। 4. **तिरुवनंतपुरम** : केरल के महामहिम राज्यपाल न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) पलनिस्वामी सदाशिवम जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मिनी बहन। 5. **पटना** : बिहार के महामहिम राज्यपाल भ्राता फागू चौहान जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. संगीता बहन। 6. **चेन्नई** : तमिलनाडू के महामहिम राज्यपाल भ्राता बनवारीलाल पुरोहित जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कलावती बहन। 7. **कोलकाता** : पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल भ्राता जगदीप धनखड़ जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कानन बहन। 8.**शिमला** : हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल भ्राता कलराज मिश्रा जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कृष्णा बहन। 9. **विजयवाड़ा** : ब्र.कु. शान्ता बहन, आन्ध्र प्रदेश के महामहिम राज्यपाल भ्राता विश्वभूषण हरिचंदन जी को राखी बांधती हुई। 10. **इन्दौर** : ब्र.कु. अनिता बहन, मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल लालजी भाई टंडन जी को राखी बांधती हुई। 11. **पणजी** : ब्र.कु. शोभा बहन, गोवा की महामहिम राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा जी को राखी बांधती हुई। 12. **रायपुर** : ब्र.कु. सविता बहन, छत्तीसगढ़ की महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसूईया उइके जी को राखी बांधती हुई।

संजय की कलम से –

चोरी

तन, मन अथवा धन से की हुई किसी भी भूल को छिपाना अथवा छिपाने की कोशिश करना 'चोरी' है। चोरी केवल धन की नहीं होती बल्कि तन और मन द्वारा किए गए अकर्त्तव्यों की भी हो सकती है। मनुष्य-मनुष्य से अपना अकर्त्तव्य तभी छिपाता है जब वह यह समझता है कि किसी को बताने से मेरी मान-हानि होगी अथवा मुझे दण्ड मिलेगा। परन्तु मनुष्य को यह याद रखना चाहिए कि दूसरों से छिपाने के बावजूद भी विकर्मों की सजा तो मिलती ही है क्योंकि जहाँ किसी की भी आँख न देखती हो वहाँ धर्मराज की आँखें तो देखती हैं। धर्मराज, चोर को दिखाई नहीं देता परन्तु धर्मराज तो चोर की चोरी को जानता ही है। इसलिए चोरी की आदत वाले मनुष्य को चाहिए कि जब कभी भी अकर्त्तव्य करने का संकल्प उठे, उस समय यह चिन्तन करे कि मेरा अशुद्ध संकल्प तो धर्मराज के पास तत्क्षण पहुँच चुका है परन्तु यदि मैं उसे वाचा और कर्मणा में नहीं लाऊँगा और भगवान से छिपाने की कोशिश नहीं करूँगा तो मुझ पर उसकी दया-दृष्टि और क्षमा-वृष्टि हो जायेगी।

यदि किसी मनुष्य को कोई फोड़ा अथवा घाव हो और वह उसे छिपाता रहे तो एक दिन वह घाव नासूर बन जाता है। उसमें से गन्द निकलता ही रहता है। वह एक दिन मनुष्य के सर्वनाश का कारण बन जाता है। अगर कोई रोगी अपने रोग को प्रकट नहीं करता तो उसका रोग पुराने एवं असाध्य रोग का रूप धारण कर लेता है, फिर एक दिन मनुष्य की जान लेकर ही जाता है। ऐसा ही परिणाम मन-वचन-कर्म की बीमारी अथवा अकर्त्तव्य या अपवित्रता को छिपाने से हुआ करता है। गुप्त रोग को बताने से मान की जो हानि होती है वह इतनी घातक नहीं होती जितनी कि न बताने के कारण बाद में वह हानिकारक सिद्ध होता है। इसलिए आध्यात्मिक सद्गुरु नाम का जो वैद्य परमात्मा शिव अथवा उसका जो साकार माध्यम है उसको अपनी अवस्था की नाड़ी दिखाकर, विकारों का टैम्प्रेचर (तापमान) जाँच कराकर अथवा अकर्त्तव्यों के लक्षण बता कर, ज्ञान की औषधि ले लेनी चाहिए। वैद्य से बीमारी छिपाने वाला और दाई अथवा माँ से भूख छिपाने वाला मनुष्य बिना आई मौत मरता है। इसी प्रकार, अपनी आध्यात्मिक भूलें छिपाने वाला व्यक्ति भी पथ-भ्रष्ट हो जाता है।

गन्दगी को छिपाकर रखने से बदबू हो जाती है। चोरी भी एक गन्दगी ही तो है जो कि और गन्दगियों को भी इकट्ठा करती है। तब तुम्हारे हृदय में भगवान का शुभ नाम कैसे निवास कर सकेगा? इसलिए तुम जो अकर्त्तव्य को छिपाने का पुरुषार्थ करते हो, उसकी बजाय ज्ञान के झाडू से मन को साफ कर उसे मन्दिर बनाने का पुरुषार्थ करो। तब तुम्हारे दुर्गुण, तुम्हारे लिए अपमान का कारण नहीं बनेंगे बल्कि तुम्हें उन दुर्गुणों को निकालने का पुरुषार्थ करता हुआ देखकर, तुम्हारे लिए वे मान का कारण बन जायेंगे। ■■■

अमृत-सूची

- चोरी 3
- सच्ची आस्तिकता (सम्पादकीय) 4
- सही कीमत का टैग 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- आनन्दमय जीवन के सूत्र 11
- परमात्मा से प्यार या भय? 14
- जीत सच्चाई की 16
- दुखों से उबारा प्यारे बाबा ने (अनुभव) 20
- हार्ट अटैक डे बना वेलेंटाइन डे (अनुभव) 21
- सम्भालिए अपने संग को 22
- कलियुग की कालिमा के पीछे छिपा है स्वर्णिम भोर 24
- आइये, क्रोध को जीतें 25
- दूर नशे से रहना सीखें (कविता) 26
- मेरा सिर्फ एक और तुम्हारे हजार 27
- बीती बातों का बोझ फेंक डालो 28
- जिसको फूल बनाते हैं (कविता) 28
- सचित्र सेवा-समाचार 29
- इतना भी कठिन नहीं है ये जीवन 30
- धर्म, कर्म और भाग्य 31
- सचित्र सेवा-समाचार 32
- अब जीवन में कोई विघ्न नहीं है (अनुभव) 34

सम्पादकीय . . .

सच्ची आस्तिकता

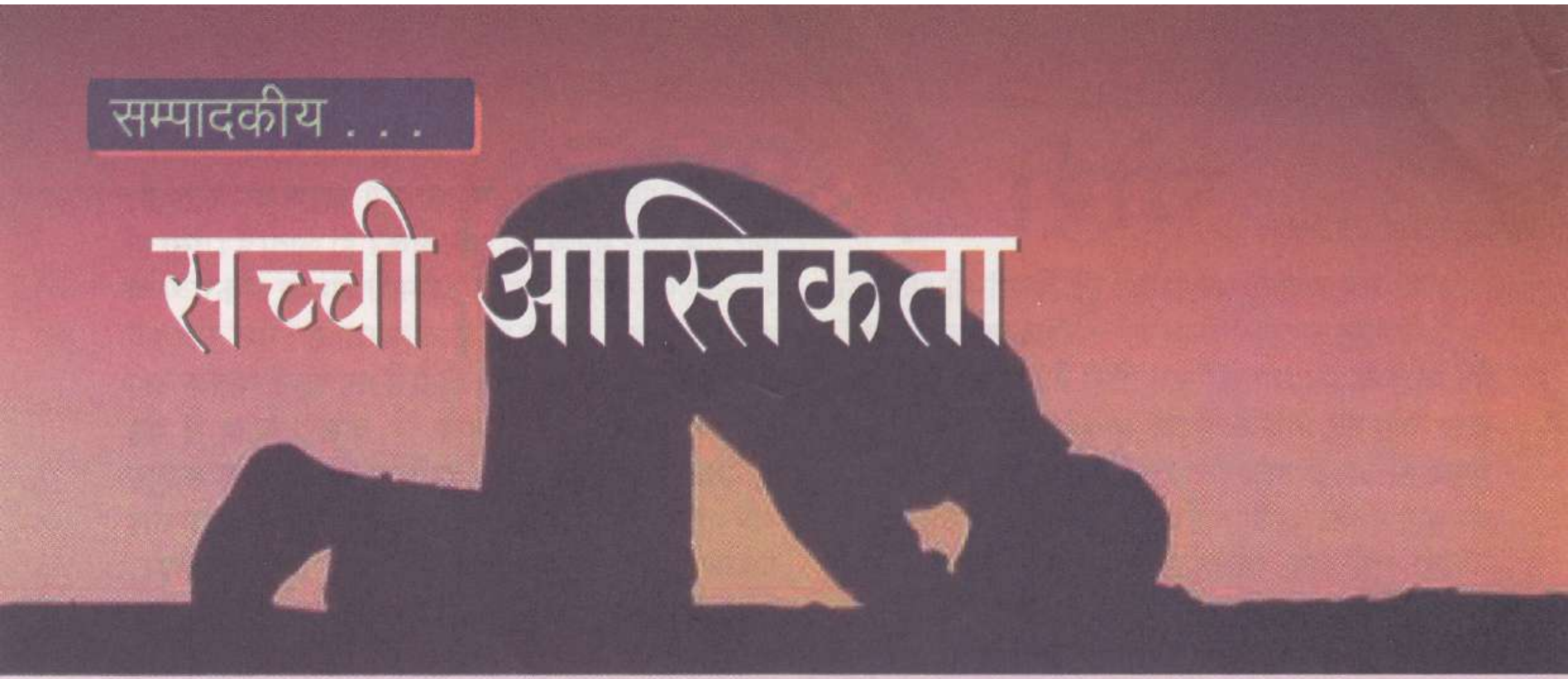

वर्तमान समय आस्तिकता का विकृत रूप विश्वव्यापी हो रहा है, आइये देखें कैसे? ऐसी आस्तिकता के बारे में हम तीन विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत चर्चा कर सकते हैं जैसे – 1.नैतिक पक्ष, 2.सैद्धांतिक पक्ष और 3.रीति-रिवाज तथा कर्म काण्ड पक्ष। इनमें से पहले हम नैतिक पक्ष को लेते हैं।

नैतिक पक्ष

आज हम देखते हैं कि नैतिकता के दृष्टिकोण से तीन प्रकार के आस्तिक लोग हैं। कुछ लोग तो ऐसे हैं जो भगवान का नाम लेकर ही पाप शुरू करते हैं। चोर, चोरी करने जाता है तो प्रभु से यह प्रार्थना करके जाता है कि 'प्रभु, आप बड़े दयालु हैं, कृपालु हैं, रक्षक हैं, पालनहार हैं; मैं आपकी शरण में हूँ, आप मुझे बचा लेना; आज मैं पकड़ा न जाऊँ।' इसी प्रकार, डाकू लोग लूटमार की मुहिम शुरू करने से पहले देवी, जिसे वे ईश्वर की शक्ति का प्रतीक मानते हैं, से अनुनय-विनय करते हैं कि 'हे रक्षयित्री देवी, हम आपकी छत्रछाया के नीचे हैं, आप हमारी माँ हैं और हमारे शत्रुओं को भयभीत करने वाली शक्ति हैं! आपकी आज्ञा पाकर अब हम यहाँ से प्रस्थान करते हैं और आपसे यह कामना करते हैं कि आपकी रक्षा का आंचल सदा हमारे ऊपर रहे।' इसी तरह से अन्य भी कई अपराध भगवान की जय बोलकर ही प्रारम्भ किये जाते हैं।

दूसरे प्रकार के वे लोग हैं जो कोई सामाजिक अपराध अथवा अनैतिक कार्य करके भगवान से प्रार्थना किया करते हैं कि 'हे प्रभु, हम नीच हैं, हम पापी हैं परन्तु फिर भी तुम्हारे बच्चे हैं, तुम हमें क्षमा कर देना। भगवान, आप दया के भंडार हैं। हम भूलनहार हैं, आप बख्शनहार हैं, आप हमारे अवगुणों को चित्त पर न धरना।' ऐसे लोग प्रतिदिन कालाधन इकट्ठा करते, चोर-बाजारी करते, दिल खोल कर झूठे धन्धों में हाथ रंगते, शराब पीते, काम-क्रोध के काले कारनामों में रात-दिन लगे रहते और फिर घंटा-दो-घंटा अपने निवास के पूजा-कक्ष में, अपने मनोनीत भगवान को रिझाने के बचकाने साधन अपना कर, भगवान का दिल बहलाने के बहाने अपना भी दिल बहला लेते। वे प्रतिदिन प्रभु से आर्त शब्दों में कहते हैं कि 'प्रभु जी, मैं मूर्ख, खल और कामी हूँ, आप मेरे विषय-विकार मिटाओ' और फिर वे विषय-विकारों की ओर तेजी से बढ़ते जाते हैं। ऐसे लोग कभी हरिद्वार में गंगा जी में गोता लगा आते, कभी किसी मन्दिर की दहलीज पर मस्तक रगड़ आते या मस्जिद में सिजदा कर आते या गिरजाघर में अपने पापों को स्वीकार कर आते या ब्राह्मणों को कुछ दान-दक्षिणा देकर अनिष्ट से बचने और इष्ट को अपने पक्ष में करने का पुरुषार्थ करते हैं। वे करोड़ों के काले धन से अथवा शोषण से इकट्ठे हुए पैसे में से कोई मन्दिर बनवा देते, किसी धर्मशाला में दान देकर अपने नाम की शिला लगवा लेते, अपने पूज्य ग्रन्थ के लिए रूमाल दे देते, अपने यहाँ 'देवी-जागरण' करा लेते या सत्यनारायण की कथा रखवा लेते अथवा ऐसा ही

अन्य कोई कार्य करते हैं। ऐसे लोग मन में सोचते हैं कि इस संसार-सागर में जीव तो पापी है ही और चूँकि प्रभु अनन्त कृपा और करुणा वाला है, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि यथा-सम्भव दान-पुण्य, पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा इत्यादि करता रहे।

तीसरी प्रकार के आस्तिक लोग वे हैं जो यह मानते हैं कि किन्हीं परिस्थितियों में तो परमात्मा भी क्रोध करता है और किन्हीं अच्छे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा करना भी धर्म है और इस काम और मोह वाली सृष्टि को स्वयं ईश्वर ही ने अपनी 'माया' से रचा है इसलिए गृहस्थ को 'काम' में प्रवृत्त होना वर्जित नहीं है और कि संन्यास करने के बाद ही मनुष्य को ब्रह्मचर्य तथा पूर्णत: निर्विकार जीवन बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। हो सकता है कि ऐसे लोग अपने ऊपर नियमों का थोड़ा अंकुश भी रखते हों तथापि यह सोचकर कि सबकुछ ईश्वर ही की इच्छा से होता है, वे गोरख धन्धों में पड़े रहते हैं।

ऊपर तीन प्रकार के जिन विकृत आस्तिकों का वर्णन किया गया है, उनमें भी नैतिकता की कला और काष्ठा अपनी-अपनी होती है और उनके अतिरिक्त भी विकृत आस्तिक लोगों की श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं परन्तु ये मुख्य श्रेणियाँ हैं। परन्तु इतना तो स्पष्ट है कि ऐसे आस्तिक लोगों को देखकर ही संसार नास्तिकता की ओर बढ़ा है क्योंकि जो लोग यह मानते हैं कि ईश्वर हमारे कर्मों को देखता है और हमें उसका फल देता है, जब वे ही बुरे कर्म करके ईश्वर को अपने पक्ष में करने का कुछ यत्न करते हैं तो दूसरे लोगों की आस्था स्वाभाविक तौर से टूट जाती है और लोग ऐसा मानने लगते हैं कि या तो ईश्वर है नहीं और अगर है तो वह इतना असमर्थ है कि लोग उसका नाम लेकर भी धोखाधड़ी करते हैं और वह इन लोगों के विरुद्ध कोई कार्यवाही कर नहीं सकता और या वह जरूरत से ज्यादा सज्जन और सुशील है कि ऐसे दुष्ट लोगों के कर्मों में भी हस्तक्षेप नहीं करता और या लोगों ने ईश्वर को एक आड़ बनाया हुआ है जिसके पीछे छिपकर वे शोषण करते और सामाजिक अपराधों में प्रवृत्त होते हैं। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो ऐसा आस्तिकवाद, नास्तिकवाद से भी खतरनाक है और ऐसा भक्ति मार्ग, दुर्गति मार्ग है क्योंकि भगवान का नाम लेकर लोग विकारों की दलदल में धंसते जाते हैं और अपने काले कारनामों में भगवान को भी संरक्षक, सहायक या प्रेरक अथवा विषय-विकारों का आदि सर्जक मानते हैं। भगवान में भी क्रोधादि का उद्रेक बताकर स्वयं उसे भी दोषी ठहराने का पाप करते हैं और पाप को ईश्वरीयता की छाप लगाकर उसे अंगीकार करते हैं।

आस्तिकता का दूसरा विकृत रूप – सैद्धान्तिक पक्ष

जो लोग ईश्वर को मानते हैं उनमें ईश्वर के स्वरूप के बारे में भी मतैक्य नहीं है। कई ईश्वर को साकार, कई निराकार और कई निराकार एवं साकार दोनों रूपों में मानते हैं। कई लोग ईश्वर को निष्क्रिय, तटस्थ, साक्षी और अकर्ता मानते हैं और अन्य कई यह कहते हैं कि वृक्ष का हरेक पत्ता भी उसकी ही शक्ति अथवा इच्छा से हिलता है और अन्य कई कहते हैं कि कुछ काम ऐसे हैं जो वह करता है और अन्य कुछ कार्य ऐसे हैं जो उसके स्वरूप के विरुद्ध हैं और जिन्हें वह नहीं करता। कुछ कहते हैं कि वह हमारा माता-पिता है और कुछ उसे साजन अथवा सजनी मानते हैं और अन्य कहते हैं कि वह माता-पिता नहीं और उसकी कोई सन्तान नहीं है बल्कि वह मालिक है और हम बन्दे हैं। कई लोग कहते हैं कि भगवान सर्वव्यापक है और एक विभु है परन्तु अन्य कहते हैं कि भगवान की भगवती भी है और वह विभु नहीं, प्रभु है। कुछ तो यह भी कहते हैं कि हम सब परमात्मा के अंश हैं और एक समय आयेगा जब उसमें ही लीन हो जायेंगे। इस प्रकार जितने मुँह उतनी ही बातें हैं। इससे स्पष्ट है कि लोग ईश्वर को मानते तो हैं परन्तु जानते नहीं। स्वयं गीता में भी महावाक्य हैं कि 'कोटि-कोटि लोगों में से भी विरला ही मुझे जानता है' परन्तु परमात्मा को मानते करोड़ों लोग़ हैं। इस प्रकार का यह आस्तिकवाद कि जिसमें ईश्वर को मानते हैं परन्तु जानते नहीं, उसके प्रति भावना और भक्ति तो है परन्तु उसका ज्ञान नहीं, अन्धश्रद्धा पर ही तो आधारित है। यह अध्यात्मवाद में एक प्रकार का अनाचार है, क्योंकि

जिस-किसी को भी परमात्मा मान लेना वैसा ही है जैसा कि किसी पत्नी द्वारा जिस किसी भी पुरुष को पति मान लेना। सैद्धान्तिक तौर पर इस किस्म के अन्धश्रद्धा-युक्त आस्तिकवाद ने भी मनुष्य को बहुत हानि पहुँचाई है। इससे मनुष्य परमात्मा से योगयुक्त होने से वंचित रह गया है और उसकी ईश्वरीय सम्पत्ति को भी प्राप्त करने का अनाधिकारी हो गया है जो कि आज के समाज की अवस्था से स्पष्ट ही है।

आस्तिकवाद का तीसरा रूप – रीति-रिवाज और कर्म-काण्ड पक्ष

तथा-कथित आस्तिक लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के जिन कर्म-काण्डों में प्रवृत्त हैं, वे भी बड़े खर्चीले, पेचीदा और बहुत से तो घिनौने भी हैं। उदाहरण के तौर पर, काली पर बलि चढ़ाना, बकरों को मार कर मौज मनाना, धतूरा और भांग पीकर समाधि लगाने की आशा करना इत्यादि इन्हीं में से ही कुछ हैं। कई तो अपने इष्ट को प्रसन्न करने के लिए नर-बलि तक से भी नहीं चूकते और अन्य कई, हिंसा के प्रतीकों को भी धर्म के चिह्न मानते हैं।

सार रूप में यह कहना यथार्थ ही होगा कि ज्ञान-रहित, भक्ति-परक उपरोक्त प्रकार के आस्तिकवाद यद्यपि एक ओर मनुष्य को अल्पकाल के लिए कुछ राहत देने के निमित्त बने हैं तथापि वे उत्तरोत्तर उसे अध्यात्मवाद की सीढ़ी से नीचे ही उतारते चले आये हैं और यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में, न चाहने पर भी मनुष्य को पाप की दलदल में धकेलते चले आये हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि घोर कलियुग आ गया है और अज्ञानता का घटाटोप अन्धकार विश्व में छा गया है जिसमें मनुष्यों द्वारा जलाये गये अध्यात्मवाद के दीपक टिमटिमाते-टिमटिमाते अब भक-भक वाली अवस्था को अर्थात् बुझने से पूर्व की अवस्था को आ पहुँचे हैं। वे मनुष्य के तर्क के झोंकों और विज्ञान के तेज-तर्रार प्रहारों के सामने टिक नहीं पा रहे और अपनी दुर्बलता के कारण मनुष्य का मुख आस्तिकवाद से मोड़कर विज्ञान और भौतिकतावाद की चकाचौंध की ओर मोड़कर उसे नास्तिक बनाने के निमित्त बन रहे हैं। उनका बाहर का रूप सुन्दर, शान्तिप्रद और मनोरंजक है परन्तु वास्तव में वे अपनी मोहिनी शक्ति से मनुष्य को परमात्मा के यथार्थ स्वरूप से दिनोंदिन दूर कर, अपने गोरखजाल में ले जा रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि आज मनुष्य गुरु-स्मरण, शास्त्र-स्मरण, मन्त्र-स्मरण, देव-स्मरण इत्यादि अनेक प्रकार के स्मरण में पड़ कर सच्चे प्रभु को विस्मृत कर चुके हैं अर्थात् क्रियात्मक रूप से नास्तिक बनते जा रहे हैं।

आस्तिकता की ओढ़नी ओढ़े नास्तिकता

नास्तिकता का एक ऐसा भी रूप है जो आस्तिकता की ओढ़नी ओढ़े हुए है अथवा जिस पर लेबल आस्तिकता का है परन्तु उसमें की सामग्री नास्तिकता की है। आज ऐसे 'आस्तिक' कहलाने वाले भी नास्तिक बहुत हैं। ये वे लोग हैं जो स्वयं को ही शिव अथवा ईश्वर मानते हैं। वे आत्मा और परमात्मा में अभेद मानकर 'तत् त्वमसि' अथवा 'सोऽहम' का यह भाव लेते हैं कि आत्मा मूलतः परमात्मा ही है। यद्यपि देखने में यह आस्तिकता है परन्तु वास्तव में है यह भी नास्तिकता ही क्योंकि अपने से भिन्न एक सर्वोपरि, सर्वशक्तिवान, माया-रहित, सदा आनन्द स्वरूप, कल्याणकारी, मार्गदर्शक को न मानना गोया उस परमात्मा के वरदानों से वंचित रहना है।

ऊपर हमने अनेक प्रकार की नास्तिकता का जो उल्लेख किया है उन सबके कथनोपकथन के पीछे हमारा उद्देश्य यह है कि लोग एक ज्योतिस्वरूप, जन्म-मरण-रहित, सर्वशक्तिमान, सदा निर्विकार परमात्मा को जानें, उसे मानें, उससे योग-युक्त हों और उसकी आज्ञा के अनुरूप ही मन, वचन और कर्म को पवित्र बनायें, जो परमात्मा कल्याणकारी होने से शिव नाम से अभिहित (उल्लिखित) होता है। हमें उस परमात्मा को जानकर ही मानना चाहिए और मानने का प्रयोजन तभी सफल होता है जब अपने मान्यवर की आज्ञा को माना जाये। हमें यह मालूम होना चाहिए कि वह परमात्मा अपना परिचय स्वयं ही देता है और दे भी रहा है। स्वयं उस द्वारा दिये हुए ज्ञान को प्राप्त कर उससे योगयुक्त होना, विकर्ममुक्त होना ही सच्ची आस्तिकता है। ■■■

सही कीमत का टैग

■■■ ब्रह्माकुमारी मंजूला, बेगुर (बैंगलूरू)

मैंने आज सुबह एक सपना देखा। मैं भारत के सबसे बड़े मॉल में एक जोड़ी जुराब और एक जोड़ी चप्पल खरीदने गयी थी। मॉल में जैसे-जैसे अंदर गयी, मैंने 9000 रुपये के मूल्य टैग के साथ एक स्वेटर देखा। जुराबें 8000 रुपये की थी और आश्चर्यजनक बात यह थी कि 16,000 रुपये की चप्पल थी। मैं सेल्समैन को तलाशने लगी। वह घड़ी के काउंटर पर मौजूद था। वह एक ग्राहक को घड़ी दिखा रहा था, 225 रुपये की रोलेक्स घड़ी। मैंने हैरान होकर सेल्समैन से पूछा कि ये रोलेक्स घड़ी 225 रुपये में कैसे बिक सकती है और जुराबों की एक सस्ती जोड़ी कैसे 8000 रुपये में बिक रही है? उसने कहा, 'किसी ने कल रात चोरी से इस दुकान में घुसकर सब सामानों पर से कीमत के टैग बदल दिए हैं।' ग्राहक नहीं जानते कि इन वस्तुओं का असली मूल्य क्या है? मुझे उम्मीद है कि हम जल्दी ही सभी वस्तुओं पर सही मूल्य का टैग लगा पाएँगे।

सपने से जागने के बाद मैं विचार करने लगी कि सृष्टि रूपी बड़े मॉल में भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। सृष्टि के आरम्भ में यानि के सतयुग और त्रेतायुग में जिन सद्गुणों पर अति अमूल्य होने का टैग लगा था, कलियुग आते-आते वह टैग बदल चुका है। आज प्रतिष्ठा, नाम, मान, शान, प्रसिद्धि, दिखावा, पैसा, शारीरिक बल, सुन्दरता आदि पर महंगा टैग लगा है। जिसके पास ये चीजें हैं उसे सफल और समझदार माना जाता है। इसके विपरीत, ईमानदारी, नैतिकता, सत्यता, आध्यात्मिकता, मान-सम्मान, खुशी, रिश्ते, शान्ति, संतोष, प्रेम, दया, मित्रता आदि पर सस्ता टैग लगा दिया गया है। लोग इन्हें सस्ती और बेकार वस्तुएँ समझ इनकी उपेक्षा कर रहे हैं। महंगे टैग वाले छल-कपट, असन्तोष, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि का अधिक से अधिक संग्रह कर रहे हैं।

टैग बदलने का यह कुकर्म किसने किया? परमात्मा पिता ने तो सही टैग लगाकर यह सृष्टि हमारे हवाले कर दी थी। लेकिन, द्वापरयुग आते-आते देह अभिमान और उसके बाल-बच्चे, चोरी-छिपे सृष्टि रूपी माल में घुसे और टैग बदल डाले।

समय-समय पर अनेक धर्मपिता आए, उन्होंने टैग बदलकर सत्य, प्रेम, अहिंसा, भाईचारा, त्याग, दया आदि को उनका वास्तविक मूल्य दिलवाने की भरसक कोशिश की परन्तु उनके जाने के बाद, उन्हीं चोरों ने पुन: असत्य, घृणा, हिंसा, शोषण, क्रूरता आदि को अमूल्य बना दिया। यही कारण है कि आज झूठ बोलने वाले को होशियार, हिंसा करने वाले को ताकतवर, प्रेम करने वाले को दब्बू, त्याग करने वाले को बुद्धू और दया करने वाले को डरपोक माना जाता है। आज्ञाकारी को भोला और सामने बोलने वाले को चंट समझा जाता है।

टैग के बदलने से सारी सृष्टि में दुख-अशान्ति का माहौल है। सद्गुण और श्रेष्ठ संस्कार मूल्यहीन घोषित होकर मुँह छिपाने को मजबूर हो चुके हैं। फैशन, बेशर्मी, अश्लीलता का सरेआम मान-सम्मान किया जा रहा है।

भ्रमित मानव खुशी पाने के लिए नकली टैग लगी महंगी चीजें लेने को मजबूर है परन्तु अफसोस! खुशी मिल नहीं पा रही है। वह उलझन में है कि आखिर गलती कहाँ हो रही है और उसे कैसे सँवारा जा सकता है।

ऐसे भ्रमित मानव को सही दिशा दिखाने के लिए निराकार परमपिता परमात्मा कलियुग के अन्त में स्वयं सृष्टि पर अवतरित हो मानव मात्र को सिखा रहे हैं कि सत्य, प्रेम, दया, पवित्रता, न्याय, त्याग आदि सद्गुण इतने अमूल्य हैं कि इनकी धारणा से मानव देव बन सकता है। रोग, शोक, कलह, क्लेश सब समाप्त हो सकते हैं। इन गुणों को धारण करने वाला पदमापदमपति बनता है। दूसरी ओर; काम, क्रोध, लोभ....आदि विकारों, बुराइयों पर से कीमती टैग उतारकर इन्हें आउटडेटेड चीजों वाले स्टोर में डाल दो। इन्होंने ही मानव को मानव से लड़ाकर उसे दैत्य बनाया है, भारत के सोने-हीरे से भरे मटके खाली करवाकर इसे कंगाल बनाया है। अत: इन कीमतहीन चीजों को सृष्टि रूपी मॉल से बाहर निकाल दो। ■■■

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

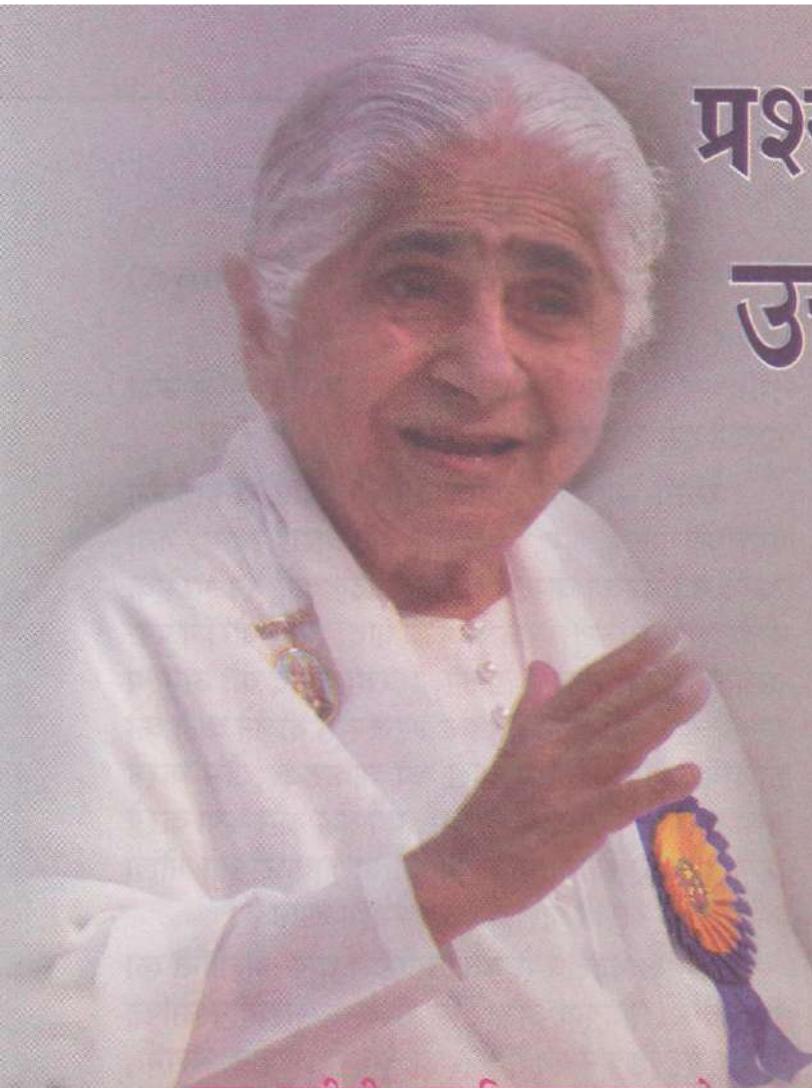

प्रश्न- दादीजी, भाग्यविधाता बाप हमसे क्या चाहता है?

उत्तर- हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति कैसी हो, वो ध्यान रखना है। स्मृति के लिए सुखमनी में कहा जाता है, सिमर-सिमर सुख पाओ। और कोई बात स्मृति वा सिमरण में नहीं आती है। हमारा बाबा जैसा चाहता है, उसमें ही है सबका भला। अभी हमारी रुकती कला नहीं है। बस, बाबा ने ऐसे पंख दिये हैं, उड़ जा रे पंछी। बाबा, कहाँ जायें? बच्चे आ जा मेरे मीत, हमको बाबा बुला रहा है। मैं भी कहती हूँ, वन्डरफुल बाबा आप हो, जो हमारा ध्यान कहीं जाने नहीं देते। मैं कौन, मेरा कौन की स्मृति से अन्त मते सो गति होगी। कोई भी बात की न इच्छा है, न ममता है। कभी यह नहीं आता कि यह छूट न जाये, मुझे यह चाहिए, नहीं। भाग्यविधाता बाप यही चाहता है कि प्यार से मुझे याद करके, मेरे समान बन जाएं। बाबा ने कहा है, बच्चे, कोई बात में भी कभी भी, क्या करूँ, कैसे करूँ, यह नहीं कहो क्योंकि तुम मेरे बच्चे हो ना। क्या करूँ का जवाब है, कुछ नहीं करो, सिर्फ विकर्माजीत बन जाओ। संगमयुग है, भाग्यविधाता बाबा साथ है तो इतने बड़े संगठन में बैठे सभी शान्त और सदा खुशराज़ी हैं क्योंकि सच्चाई है तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है, यह मेरा अनुभव है। वहाँ दुनिया में तो कोई भी, कभी भी नाराज़ हो सकते हैं परन्तु हमारे यहाँ सब भाग्यशाली हैं क्योंकि कभी नाराज़ नहीं होते हैं। बाबा को हमारी कम्पलेन्ट नहीं होती है इसलिए मैं खुशनसीब हूँ। बाबा ने भी ऐसे कर्मों से बचा लिया है जिन कर्मों से मैं नाराज़ रहूँ। बाबा कहते हैं, सबके संग भी रहना है पर जो तुमको बाबा के संग का रंग लगा है, वही सबको लगे, यह भावना रखनी है, तभी सेफ रह सकेंगे।

प्रश्न- सबसे बड़ा दुश्मन माया का संकल्प कौन-सा है?

उत्तर- संगमयुग पर बाबा मैं आपकी हूँ, आप मेरे हो। मैं अकेली नहीं रह सकती हूँ ना। बाबा, आप चाहते हो ना कि हम सब एक के होकर रहें। हम सब एक के हैं और एकता में रहते हैं। बाबा, आपका बनने से बहुत सुख मिला है ना। बाबा, आप संगमयुग में माँ भी हैं, तो बाप भी हैं, शिक्षक और सतगुरु के साथ सखा भी हैं। ये पांचों सम्बन्ध बहुत मीठे हैं। हमारी उड़ती कला, सबका भला। भला माना सबका कल्याण, सबका उद्धार।

हमारा तन और मन तो अच्छा सफल हो रहा है, पर धन कहाँ से आये! अभी जो यज्ञ सेवा अर्थ डालते हैं उसमें से अगर यह संकल्प आये कि कुछ तो रखना चाहिए आइवेल के लिए, यह सबसे बड़ा दुश्मन माया का संकल्प है। इसमें बुद्धि से काम लेना होता है। आपने देखा होगा, मेरा हाथ सदा ही खाली है, पर मैं बिचारी नहीं हूँ क्योंकि विचारों की ऊँची क्वालिटी पर अटेन्शन है।

बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं। बाबा कहता है, तुम मेरे बच्चे हो। मैं कहती हूँ, वो एक है, उसमें ऐसी ताकत है जो सभी को कहता है, मेरे बच्चे हैं। बाबा कहता है, बच्ची, कुछ न बोलो, बोलने की सेवा बहुत हुई है, अभी सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है इसलिए कभी भी संकल्पों

से भारी नहीं हुई हूँ। बाबा कहते, शान्ति से काम लो। शान्ति सूखी नहीं है, हम स्नेही हैं, सहयोगी हैं। स्नेही और सहयोगी का एक खुशबू वाला फूल भी मिलेगा तो उसे सम्भाल कर रख देंगे।

प्रश्न- सतोप्रधान सद्गति के लिए क्या पुरुषार्थ करें?

उत्तर- रूहानियत और रमणीकता। सतोप्रधान आत्मायें, इस समय सेवा करते हुए अपनी सतोप्रधान स्थिति बना लेती हैं। हमें सिर्फ सतो नहीं बल्कि सतोप्रधान बनना है। सम्बन्ध-सम्पर्क में आते, कार्य व्यवहार करते सतोप्रधान बनने का ध्यान है तो उनको देख औरों को भी मदद मिलती है। सेवा है ही सतोप्रधान बनने और बनाने की।

प्रश्न- दादी जी, योगी की परिभाषा बताइये?

उत्तर- कई बार बाबा से मैं गुप्त बातें करती हूँ जो किससे नहीं कर सकती हूँ क्योंकि वो कैच नहीं कर सकेंगे। बाबा ने क्या-क्या सिखाया है, वो सब सीख करके तैयार रहें, परमधाम घर जाके सतयुग में आने के लिए। बीच में ही कोई अचानक चला जाये तो भी कोई चलायमानी या डोलायमानी नहीं है। मैं शक्ति भवन में बैठकर कभी-कभी अपने आपसे पूछती हूँ कि अभी क्या करने का है मेरे को? बाबा कहते हैं, पूछो नहीं। ऐसे न्यारे रहो जो सूरत-मूरत से सबके प्यारे बन जाओ। आजकल की राजाई में रहने वाले चिंताओं में बिचारे हो गये हैं। बाबा कहते हैं, आप तो शहनशाह के बच्चे हैं।

जो भी गीत बजते हैं उनके अर्थ स्वरूप बन जाओ। सिर्फ मुख से नहीं बताओ पर चलन और सूक्ष्म संकल्प की भावना की भासना देनी है। अनासक्त वृत्ति माना कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो यह सभी के आगे बोलने में कुछ संकोच नहीं होता है कि यहाँ बैठे-बैठे बाबा मुझे भले खींच लेवे। मैंने आज बाबा को कहा कि जो ऊपर में पूर्वज गये हैं ना, कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं? कभी उन सब मूर्तियों (पूर्वजों) के दर्शन होने चाहिएँ। बाबा ने गुप्त योगी-सहयोगी बनने के लिए जो सिखाया है, वो मैं अभी सुनाऊं क्या? योगी वो जो सर्व के सहयोगी बनें।

प्रश्न- दादी जी आपके स्वास्थ्य का आधार क्या है?

उत्तर- मेरी तबियत का आधार बाबा का प्यार है। मुरली सुनाना भी बाबा का प्यार है और सबसे मिलना भी बाबा का प्यार है। तो बाबा का प्यार कैसा होता है, वो आज के बच्चों को अनुभव हो, यही भावना है। मेरी भावना से इन सबको बाबा का प्यार मिलता है, भावना है ना। जैसे बाबा ने हमें लाइफ दी है, ऐसी सबकी रहे, यह भावना है।

प्रश्न- संगमयुग की इन अन्तिम घड़ियों में हमें क्या करना है?

उत्तर- वास्तव में अभी क्वेश्चन पूछना नहीं चाहिए कि पुरुषार्थ क्या करें! खुद को ही मिसाल बनाना चाहिए कि यह पुरुषार्थ है। समय को सफल करने के लिए बाबा ने इतना कुछ समझाया है, तो यह समय है ही मन, वाणी, कर्म द्वारा सेवा करने और संकल्प, श्वास को सफल करने का। अभी खास यह ध्यान रखें कि हमारा संकल्प, श्वास निष्फल न जाये। समय को सफल करने से खुशी होती है। अभी यह नहीं पूछो कि क्या पुरुषार्थ करें? सब कुछ सफल करने का है, हो रहा है। ठीक है ना।

प्रश्न- यदि हमारे अन्दर आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती जा रही है, तो उसकी क्या निशानी होगी?

उत्तर- आध्यात्मिक शक्ति कैसे आती है? एक, बाबा साथी है। दूसरा, ड्रामा में हम जो पार्ट प्ले कर रहे हैं, हम कर रहे हैं या और कर रहे हैं, उसमें हम साक्षी हैं। जब साक्षी हैं, बाबा साथी है तो बाकी सब ऑटोमेटिक एक्यूरेट है क्योंकि बाबा मेरा साथी है। बाबा के साथी होने से साक्षी हो करके खुद का पार्ट बजाना और सारे ड्रामा के पार्ट को देख सदा हर्षित रहने का भाग्य प्राप्त होता है। कोई दिन, कोई घड़ी किसी कारण से भी निराश नहीं होते हैं। इच्छा, ममता के कारण, यह चला न जाए या यह चाहिए, यह संकल्प भी नहीं है। अपने आप, बिगर मांगे मोती मिले हैं, यह भाग्य है। हाथ खाली नहीं हैं, मिल रहा है, सब देख रहे हैं। स्वप्नों में भी क्या है? पुरुषार्थ नेचुरल है, प्राप्ति पुरुषार्थ कराती है इसलिए यह भी नहीं कि पुरुषार्थ करना चाहिए। ■■■

पत्र सम्पादक के नाम

मैं ज्ञानामृत पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका में सारे लेख ज्ञानयुक्त व प्रेरणादायक होते हैं। विशेषकर सम्पादकीय लेख व ब्र.कु.उर्मिला बहन के लेख मनभावन होते हैं। जून अंक में सम्पादकीय 'मानवीय मूल्य' में बताया गया है कि समस्त ईश्वरीय रचना में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव से आशा की जाती है कि वह न दुख दे, न दुख ले। सच्चा मानव वही है, जो ईमानदार व वफादार है, जिसमें आत्म-नियंत्रण तथा मानसिक संतुलन है। पाँच विकार मानव को शैतान बनाते हैं। 'कर्म सम्भलकर कीजिए' लेख में बताया गया है कि जैसा कर्म वैसा जीवन। बुरे कर्मों से डरो, भगवान से नहीं। भगवान माफ कर देगा लेकिन कर्म नहीं। हमारे कर्मों के भुगतान के लिए कोई न कोई निमित्त अवश्य बनता है।

चण्डी प्रसाद उनियाल, दिलशाद कालोनी (दिल्ली)

जुलाई, 2019 के सम्पादकीय 'गुणों की गहराई' में सत्य को बहुत अच्छे ढंग से स्पष्ट किया गया है। 'सुख-शान्ति का आधार सहज राजयोग' लेख ने राजयोग के बारे में इतना कुछ सिखाया कि धन्य-धन्य हो गये। 'जेल बनी रूहानी पाठशाला' लेख ने हिम्मते मर्दा मददे बाबा का पाठ पढ़ाकर सकारात्मक चिन्तन शक्ति से मन को झंकृत किया। वृद्धों की सहचरी, युवाओं की पथ प्रदर्शक, बच्चों की प्रेरक, नारियों को नारायणी बनाने वाली इस पत्रिका (ज्ञानामृत) के क्या कहने! लेखक बन्धुओं के प्रति पुन: पुन: आभार।

ब्र.कु.शम्भू प्रसाद शर्मा, सोडाला, जयपुर

जून, 2019 का सम्पादकीय 'मानवीय मूल्य' बहुत ही सारगर्भित है, पढ़ लेने के बाद चिन्तन करने को विवश करता है। ज्ञानामृत का विशेष आकर्षण 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' जीवन को उन्नत बनाने में भरपूर मार्गदर्शन करते हैं। 'सुख-शान्ति का आधार सहज राजयोग', 'सहज राजयोग – सर्वांगीण स्वास्थ्य पाने का एकमात्र मार्ग' तथा ' राजयोग द्वारा प्राप्त सूक्ष्म शक्तियाँ' तीनों लेखों में राजयोग का विस्तृत वर्णन है। तीनों संग्रहणीय रचनाएँ हैं और नए-नए दृष्टिकोण, नये-नये अर्थ सामने लाती हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

ब्र.कु.ज्ञानेन्द्र, भागलपुर, बिहार

जून, 2019 अंक में 'सहज राजयोग – सर्वांगीण स्वास्थ्य पाने का एकमात्र मार्ग' लेख पढ़कर और अधिक सहजता से राजयोग को क्रियाशील बना सकते हैं। सहज राजयोग से हम सात सूक्ष्म शक्तियों को प्राप्त कर शक्तिशाली, सुसंस्कारित, मननशील, सत्यनिष्ठ, निडर तथा क्षमाशील बन सकते हैं। इस अंक में मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है जिनको धारण कर लौकिकता से पारलौकिकता की ओर कदम बढ़ाया जा सकता है। मनसा, वाचा व कर्मणा से सार्थक कर्म कर नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। ज्ञानामृत मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का सराहनीय माध्यम है।

डॉ.रामस्वरूप गुप्त, मैगलगंज (खीरी), उ.प्र.

आनन्दमय जीवन के सूत्र

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

जब किसी व्यक्ति का परलोक गमन हो जाता है तो कहा जाता है कि 'अमुक व्यक्ति ने देह छोड़ दिया।' यहाँ सवाल उठता है कि देह को पकड़ किसने रखा था, जो छोड़ दिया। पकड़ने वाले ने जब तक पकड़े रखा, शरीर चलता रहा। जब उसने छोड़ दिया तो धराशायी हो गया। यह पकड़ने और छोड़ने वाला कौन है? दिखता क्यों नहीं है?

शरीर में मूल तत्वों का और आत्मा में मूल गुणों का स्तर

वास्तव में शरीर को धारण करने वाली और छोड़ देने वाली आत्मा है। आत्मा अदृश्य है, उसे एकान्त में, अन्तर्मुखी होकर अनुभव किया जा सकता है। शरीर तो दृश्यमान है, जो पाँच तत्वों से मिलकर बना है। इन तत्वों का शरीर निर्माण में निश्चित अनुपात है जैसे पानी 67 प्रतिशत और पृथ्वी 33 प्रतिशत है। हवा, अग्नि और आकाश का वजन भले ही मापा नहीं जा सकता परन्तु इनका भी निर्धारित अनुपात रहता है। किसी भी तत्व की मात्रा यदि कम हो जाये या बढ़ जाये तो शारीरिक बेचैनी का कारण बनती है। शरीर को चलाने वाली अदृश्य आत्मा में भी मूल रूप से सात गुण विद्यमान हैं जिन्हें वह ईश्वरीय देन के रूप में अपने साथ लेकर आती है। इन सात गुणों (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द, शक्ति) में से किसी एक का भी स्तर कम होने पर आत्मा भी बेचैनी का अनुभव करती है।

शरीर के मूल तत्वों की पूर्ति

उदाहरण के लिए, हमने बहुत शारीरिक श्रम किया और शरीर में पृथ्वी तत्व का उपभोग होकर उसका स्तर कम हो गया तो हमें भूख लगती है। हम भोजन खाते हैं परन्तु कितना? उतना ही जितने से निर्धारित अनुपात की पूर्ति हो जाए। इसी प्रकार, हमने खूब दौड़ लगाई, पसीना आया और शरीर में जल तत्व का उपयोग होकर उसका स्तर नीचे आ गया तो हमें खूब प्यास लगती है। फिर हम पानी पीते हैं परन्तु कितना? उतना ही जितने से जल तत्व का निर्धारित अनुपात पूरा हो जाए। यही बात अग्नि, हवा, आकाश आदि तत्वों पर भी लागू होती है।

जरूरत है शान्ति की कमी की पूर्ति की

जैसे शरीर की शक्ति कर्म में लगती है और फिर उसकी पूर्ति करनी पड़ती है, इसी प्रकार आत्मा की शक्तियों या गुणों का स्तर भी कर्म में आने पर नीचे चला जाता है जिसकी पूर्ति करनी अति आवश्यक होती है। जैसे मान लीजिए, हम किसी ऐसे माहौल में कर्म कर रहे हैं जहाँ शोरगुल है, नकारात्मक वातावरण है, कोई अपशब्द या अपमानजनक शब्द प्रयोग कर रहा है, हम पर इल्जाम लगाया जा रहा है या संशयात्मक नजरों से देखा जा रहा है। हमारी उचित बात को भी ठुकराया जा रहा है या पक्षपात किया जा रहा है। इस प्रकार के वातावरण में रहने से आत्मा का शान्ति का स्तर काफी नीचे आ जाता है। जैसे पानी का स्तर नीचे आने पर हम पानी की मांग करते हैं इसी प्रकार फिर आत्मा भी बार-बार शान्ति की मांग करती है। अन्दर से आवाज आती है, शान्ति चाहिए, कहीं शान्ति के स्थान पर जाना चाहिए, शान्ति के माहौल की सख्त जरूरत है आदि-आदि। प्यास लगने पर पानी तो हर जगह सुलभ है परन्तु शान्ति इतनी आसानी से सुलभ नहीं हो पाती। शान्ति की न कोई प्याऊ है, न आर.ओ., न बोतल में बिकती है, न नदी, कुएँ, तालाबों में बहती है। यदि मनुष्य मन्दिर में

जाता है तो वहाँ भी अल्पकाल की शान्ति मिलती है। जब तक वहाँ बैठा है, शान्ति है, बाहर निकलते ही अशान्ति पुन: घेर लेती है। यह तो ऐसे ही है कि जब तक डॉक्टर की दुकान में रहे, खाँसी ठीक रही, घर आए तो पुन: चालू हो गई। परन्तु दवा तो ऐसी चाहिए कि घर में भी खाँसी न आए। तो हम पुन: उस बात पर आते हैं कि शान्ति का यह स्तर कैसे प्राप्त हो। अन्दर से बार-बार शान्ति की मांग उठ रही है और पूर्ति का कोई साधन दिख नहीं रहा है तो क्या किया जाए?

शान्ति की मांग दबाई जाती है, पूर्ण नहीं की जाती

ऐसे में व्यक्ति बहुधा भौतिक साधनों में शान्ति खोजना चाहता है। किसी मित्र से वार्तालाप करके, किसी से सोशल मीडिया पर चैट करके, कोई टी.वी.शो देखके, बाजार में शॉपिंग करके, मनपसन्द भोजन खाकर या अन्य इसी प्रकार के साधनों द्वारा शान्ति की मांग को तृप्त करना चाहता है परन्तु इनमें से कोई चीज शान्ति के स्तर को पूर्ण नहीं करा पाती, हाँ, कुछ देर के लिए भीतर की आवाज को दबा देती है, उधर से ध्यान हटा देती है या उसे भुला देती है। दिन तो इस प्रकार बीत जाता है परन्तु जैसे ही व्यक्ति रात्रि के एकान्त में जाता है, शान्ति की वह प्यास पुन: जाग उठती है। शान्ति की कमी बेचैन करने लगती है। चिन्ता करते, खालीपन को झेलते, करवटें बदलते आधी रात या कभी तो सारी रात भी गुजर जाती है। शान्ति से खाली हुई जगह को कोई भी भौतिक प्रयास भर नहीं पाता है। फिर व्यक्ति को एकान्त से भी डर लगने लगता है। क्योंकि लोगों की भीड़ में, भीतर की जो मांग दबी रहती है वह एकान्त में जागकर पीड़ा को बढ़ा देती है। इसका समाधान क्या है?

समाधान है राजयोगी जीवनशैली में

इसका समाधान है राजयोग। राजयोग एक ऐसी जीवन पद्धति है जिसमें शरीर और आत्मा दोनों का सन्तुलित पोषण होता है। इसमें हम शरीर को स्वस्थ रखने के साथ आत्मा को भी स्वस्थ रख पाते हैं। शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ आत्मा की आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर पाते हैं। राजयोग में हम जान जाते हैं कि जैसे प्रतिदिन शरीर को भोजन, मोबाइल को चार्जिंग, गाड़ी में पेट्रोल जरूरी है उसी प्रकार आत्मा की भी चार्जिंग जरूरी है। आत्मा का चार्जर है परमपिता परमात्मा। आत्मा में शान्ति का जो लेवल कम हुआ है वो पिता परमात्मा से जुड़कर ही पूर्ण हो सकता है। जैसे खेत को यदि कुएँ से जोड़ दिया जाए तो उसमें पानी भर जाता है। इसी प्रकार आत्मा को परमात्मा से जोड़ दिया जाए तो उसमें भी शान्ति भर सकती है। जोड़ने के लिए सबसे पहले देह से न्यारा होकर आत्म चेतना में बैठने की आवश्यकता है। आत्म चेतना में स्थित होकर हम परमात्मा पिता को उनके घर परमधाम में याद करते हैं तो उनकी शान्ति की किरणें आत्मा में भरने लगती हैं। प्रारम्भ में यह अभ्यास हमें यह मदद करता है कि शान्ति का जो स्तर कम हुआ है, हम उसे भर पाते हैं। अगले कदम में हमारी यह मदद करता है कि उस नकारात्मक वातावरण का हम पर बुरा प्रभाव ही ना पड़े। हम शान्ति के स्तर पर वार होने ही ना दें। परमात्मा से निरन्तर जुड़ाव से भरपूरता बनी ही रहे। तीसरे कदम में हम इतने शक्तिशाली हो जाते हैं कि हमारी आन्तरिक शान्ति के प्रकम्पनों से वो नकारात्मक वातावरण ही धीरे-धीरे बदल कर हमारे अनुकूल होने लगता है। इस प्रकार, राजयोगी जीवन शैली आत्मा को अन्दर से सशक्त करती है।

हम बन जाते हैं वातावरण के रचयिता

यह बात केवल शान्ति के गुण के लिए नहीं बल्कि आत्मा के अन्य सभी गुणों पर भी लागू होती है। मान लीजिए, हम किसी ऐसे माहौल में रह रहे हैं जहाँ आपसी प्रेम नहीं है, नफरत है, तिरस्कार है, दुत्कार है। ऐसे में आत्मा में प्रेम का स्तर कम हो जाता है। इस स्तर की पूर्ति को यदि वह भौतिक वस्तु या व्यक्तियों में खोजती है तो अल्पकालिक राहत मिलती है क्योंकि वस्तुएँ तो जड़ हैं, उनमें प्रेम होता नहीं है और व्यक्ति स्वार्थी और कमजोर हैं, उनके प्रेम में स्थायित्व नहीं है। अगर प्रेम का यह स्तर पूर्ण न किया जाए तो अन्दर बचैनी बनी रहती है इसलिए जैसे आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से जोड़कर हमने

शान्ति का स्तर पूर्ण किया, ऐसे ही प्रेम का भी कर सकते हैं। यहाँ भी हमारे इस प्रयास के तीन कदम हैं। पहले कदम में हम प्रेम के स्तर में आई कमी को परमात्म प्यार से भरते हैं। दूसरे कदम में हम कमी को आने ही नहीं देते अर्थात् परमात्मा के प्रेम के गहरे अहसास में डूबे रहकर उस वातावरण से अप्रभावित हो जाते हैं और तीसरे कदम में हम परमात्म प्रेम के दाता बन उस वातावरण को ही परिवर्तित कर सर्व के अनुकूल बना देते हैं। यही अभ्यास अन्य आत्मिक गुणों जैसे पवित्रता, आनन्द, शक्ति आदि के लिए भी अपनाना है। इससे हम वातावरण के अधीन न रहकर उसे अपने अनुसार रचने वाले बन जाते हैं।

आध्यात्मिक शून्यता

हम जानते हैं, आज के समय में बहुत सारी बीमारियाँ मनो-कायिक (Psycho-somatic) हैं। ये पहले आत्मा में आती हैं और बाद में इनके लक्षण शरीर में प्रकट होते हैं। आत्मा में आने वाली बीमारी वास्तव में, आत्मा के निहित गुणों के स्तर का कम होना ही है। पी.जी.आई. चण्डीगढ़ के मानद प्राध्यापक डॉ.एन.एन. वीग कहते हैं, 'आधुनिक जीवनशैली से प्राप्त सभी बीमारियाँ 'आध्यात्मिक शून्यता (Spritual Vaccum)' के कारण होती हैं। यह शून्यता, विवेक शून्यता को जन्म देती है जिसमें मनुष्य की सार-असार को परखने की शक्ति नष्ट हो जाती है।' जैसे कि शरीर में मिनरल, विटामिन्स, कैल्शियम के मूल स्तर के कम होने से कहीं दर्द या चक्कर या कमजोरी आदि होने लगते हैं, इसी प्रकार, आत्मा यदि छह महीने तक लगातार मूल गुणों की कमी को झेलती रहे तो सातवें मास अवश्य ही किसी घातक बीमारी के लक्षण शरीर में प्रकट होने लगते हैं, ऐसा वैज्ञानिक शोध बताती हैं। फिर इनके इलाज के लिए हम गोलियों के रूप में जो केमिकल्स लेते हैं, वे आत्मा तक तो नहीं पहुँच पाते, मूल कमी की पूर्ति तो नहीं कर पाते, हाँ, उभरे हुए लक्षणों को दबाकर अपने सहप्रभाव से कुछ नई बीमारियों को अवश्य प्रकट कर देते हैं। बीमारियों को दबाने और उभारने के इस क्रम में कितनी ही नई-नई बीमारियाँ रोज प्रकट हो रही हैं। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि हम अन्तर्मुखी बन आत्मा के मूल गुणों को अनुभव करें। उन्हें बार-बार अनुभव करना ही उन्हें बढ़ाना है। यदि हम उन्हें बार-बार अनुभव नहीं करते, तो वे सुषुप्त हो जाते हैं और हम उन्हें बाहरी जगत में ढूँढ़ने की नाकाम कोशिश करने लगते हैं। ऐसी निराशा-हताशा से बचने का एकमात्र उपाय है प्रतिदिन कुछ घड़ियाँ निकाल कर अपने आत्मस्वरूप को देखना, अपने से बातें करना, अपने एक-एक मूल गुण का चिन्तन करना, उसकी अनुभूति में डूबना, उसके प्रकम्पन फैलाना आदि-आदि। इस अभ्यास के दौरान परमात्मा पिता के गुणों से हमारा मेल होकर सोने में सुहागा हो जाएगा और हम अन्दर से भरपूर, शरीर से स्वस्थ और स्वभाव से सकारात्मक होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत कर पाएँगे। ■■■

श्रद्धांजलि

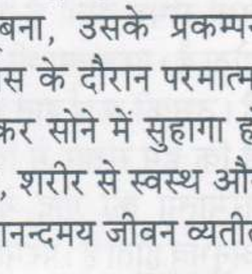

साकार बाबा की अलौकिक पालना लिए हुए रतन प्रकाश गुप्ताजी (ब्र.कु.गोपाल भाई व ब्र.कु.कानन बहन के लौकिक पिताजी) ने 26 जून, 2019 को प्रातः 7.15 पर प्यारे बापदादा की गोद ली। आप सेवानिवृत्त बैंक प्रबन्धक थे। आपने अपनी आध्यात्मिक यात्रा सन् 1962 से प्रारम्भ की। प्यारे साकार बाबा का आपको भरपूर स्नेह मिला। बाबा के संग बातें करना, खेलना, भोजन करना, झूला झूलना – ये प्रसंग सुनाते आप भाव-विभोर हो जाते थे। ईश्वरीय सेवा में आपकी अत्यधिक रुचि थी और आप अनेक विशेष सेवाओं के निमित्त भी बने। ऐसी सर्व स्नेही, महान आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

परमात्मा से प्यार या भय?

■■■ ब्रह्माकुमारी गीता बहन, शान्तिवन

हमें कोई प्यार करे – ऐसी इच्छा और तमन्ना तो अनेक लोगों में होती है परन्तु प्रेम की सच्ची समझ और परख किसी विरले को ही हो सकती है। वास्तव में प्रेम बिना जीवन नीरस और निस्सार है। जिसने जीवन में प्रेम का रस चखा ही नहीं है, ऐसा व्यक्ति जगत में सबसे ज्यादा दीन और दयनीय है। अहंकार जितना ज्यादा बढ़ता है उस हिसाब से व्यक्ति अपने आप कठोर बनता जाता है। अहंकार जितना कम होगा उतना मानव मन सरल और विमल बन जायेगा। अहंकार-शून्य होने पर मनुष्य का दिल प्रेममय और पारदर्शी बन जाता है। फिर उसमें कोई अपेक्षा, शर्त या रुकावट नहीं होती।

अपार है परमात्मा का प्यार

जिसको हम चाहें, उसे सम्पूर्ण मुक्ति दें, तब ही प्रेम जीवंत रहकर विकसित हो सकता है। प्रेम में स्वतंत्रता तभी संभव होती है जब प्रेमपात्र पर श्रद्धा और भरोसा होता है। परमात्मा भी प्राणीमात्र को सम्पूर्ण स्वतंत्रता देता है। उसकी कोई शर्त या अपेक्षा ही नहीं है। ये ही कारण है कि हम संसार में कितना भी भटकें, परम विश्राम तो परमात्मा की गोद में, उनके साथ मनोमिलन में ही अनुभव होता है। परमात्मा का प्यार अपार है।

परमात्म कार्य में गणित के बजाए कल्याण-भाव

जैसे माता कमजोर बच्चे का अधिक ध्यान रखती है, ऐसे ही परमात्मा हम पतित, भ्रष्ट मनुष्यों पर रहम करता है और स्वयं सृष्टि पर अवतरित होकर हमें विकारों की दलदल से निकाल पावन बनाता है। परमात्मा पिता तो प्यार का सागर, रहमदिल, परम करुणावान है। वह हमारी छोटी-मोटी भूलों का हिसाब नहीं रखता है। ऐसा हिसाब तो मानवीय मन में चलता है। परमात्मा का कार्य गणित से नहीं, कल्याण-भाव और रूहानी प्यार से चलता है।

परमात्मा का प्रेम है निष्काम

प्रकृति जगत में भी हम देखते हैं कि कितनी व्यवस्था, करुणा तथा देने के भाव की सुंदरता है। प्रकृति निरंतर हमारी सेवा में उपस्थित है। वह हमारे कर्म-व्यवहार को न देख, देती ही रहती है। हम कण बीज बोते हैं और प्रकृति हमें मण बीज उगाकर देती है। एक का अनेक गुणा कर देती है। तो परमात्मा, जो कि सर्वोच्च कल्याणकारी सत्ता है, वो हमसे नाराज या कोपायमान नहीं हो जाता। परमात्मा के लिए ऐसे सोचना ही गलत है। हमारी बुरी आदतों से उनको कोई लेना-देना नहीं है। हाँ, इन सबसे हमें ही नुकसान होता है। हम क्या खाते हैं, पीते हैं, कैसे जीते हैं, उसका परमात्मा के प्रेम पर जरा भी असर नहीं होता है। वो निष्काम प्रेम करता है। हाँ, गंदी आदतें, व्यसन, नशे आदि से परमात्मा की ओर जाने के हमारे अपने मार्ग में, पुरुषार्थ में अवरोध, विघ्न जरूर आता है। इनसे मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ता है, मन गुलाम बनता है, विवेक भ्रष्ट होने लगता है। खुद का मनोबल डगमगाने लगता है। इस प्रकार व्यसनी, नशेड़ी बनकर, खुद पर हम जुल्म करते हैं और साथ-साथ परिवार को भी बरबाद करते हैं। जितना हम व्यसन, विकारों की तरफ दौड़ते हैं उतना परमात्मा के प्रति हमारा ध्यान कम होता जाता है। जितना वासना की दलदल में, भँवर में फँसते हैं उतना भवसागर पार उतरने में विलंब होता है। इस प्रकार हम खुद ही खुद का नुकसान करते हैं, खुद ही खुद को श्रापित करते हैं।

इस सत्य को हम स्वयं अपने विवेक से समझते नहीं हैं इसलिए किसी महानुभाव ने परमात्मा के नाम पर बात लगाकर कही और लोगों को सुधारने का शुभ प्रयास किया। जैसे कोई कार्य हम ठीक से नहीं करते हैं तो ठीक करवाने के लिये बड़ों का नाम लेकर कहा जाता है कि

मम्मी डाँटेगी, पापा नाराज हो जायेंगे, गुरुजी अकृपा कर देंगे, साहब को अच्छा नहीं लगेगा आदि-आदि। वास्तव में हमें विवेक से सोच-समझ कर स्वयं ही हर कार्य यथार्थ रीति से करने चाहिएँ। बड़ों का नाम लेकर भय से कहाँ तक सही तरीके से काम करा सकेंगे? ऐसे ही परमात्मा का नाम देकर भय से परिवर्तन नहीं करा सकते हैं।

परमात्मा है परम साक्षी

परमात्मा कोई हमारे पाप का बदला हमें नहीं देता है। यह बिलकुल गलत और वाह्यात बात है। परमात्मा के प्यार के सामने हमारे पाप का कोई हिसाब नहीं है। पापों के कारण जो नुकसान हो रहा है या जो दुख-तकलीफ झेलनी पड़ती है, उसकी जिम्मेवारी केवल हमारी अपनी और अपनी ही है। अगर हम दुखी हैं तो ये हमारे कर्मों का ही परिणाम है। बाकी परमात्मा हमारे कर्मों का हिसाब रखता है और सजा देता रहता है, ऐसी विचारधारा तो परमात्मा को न समझने वाले लोगों के मानस की ही उपज है। परमात्मा तो परम साक्षी है। द्रष्टाभाव में स्थित एक व्यक्ति में भी कोई प्रतिक्रिया पैदा नहीं होती है तो परमात्मा में ऐसी वृत्ति कहाँ से उत्पन्न होगी? क्या परमात्मा को अन्य कोई काम ही नहीं है? दुनिया भर के लोग क्या करते हैं, उसका हिसाब रखने में ही क्या परमात्मा व्यस्त रहते हैं? एक क्लर्क से ज्यादा विशेष कोई परमात्मा का काम ही नहीं है क्या?

परमात्मा का प्यार है एकरस

वास्तव में हमें ऐसी अंधश्रद्धा या मिथ्या मान्यता से मुक्त होने की आवश्यकता है। परमात्मा पर फल-फूल, प्रसाद, नैवेद्य अर्पण करो या न करो, उसके नाम से व्रत-उपवास करो या न करो, परमात्मा का प्यार एकरस और अपार रहता ही है। वो तो हमें अनहद प्यार करता ही है। हमारा कल्याण करना ही उसका गुण है। वो तो है ही सुखदाता, दयालु, कृपालु। परमात्मा को न समझने के कारण ही भय के मारे लोग इतने सारे अनावश्यक क्रियाकांड करते रहते हैं। हम सुखी हैं या दुखी, हमारा मन शांत है या चंचल – उसका कारण हम स्वयं ही हैं। अज्ञान और उसके वश कमजोर, विकृत मन की लीला को ही माया कहा जाता है जिसके वश किये गये कर्म ही दुख के बीज हैं।

जो देंगे, वही मिलेगा

संसार में कर्म और कर्मफल का सिद्धांत अटल है। कर्म खुद ही परिणाम लाने वाला बन जाता है। इसलिये अगर हम जीवन में दुख-अशान्ति के फल खा रहे हैं तो उसका अर्थ यह है कि जाने-अनजाने गलत कर्म के बीज हमारे द्वारा बोये जा रहे हैं। इसलिये अगर हमें सदाकाल का सुख, आनंद चाहिये तो हम अपने हर कर्म को श्रेष्ठ बनायें। जैसे फल हमें चाहियें, वैसे फल देने वाले बीज हमें बोने होंगे। जो हम देंगे, वही हमें मिलेगा। तो हम स्पष्ट समझ लें कि परमात्मा कोई हमारे कर्मों को हर घड़ी देखता नहीं रहता है, ना ही उनका हिसाब रखता या रखवाता है। वो कभी भी कोपायमान नहीं होता, श्राप नहीं देता। वो तो है ही सदा पावन, सदाशिव।

अपने सुख-दुख के कारण हम खुद हैं

हमारे गलत कर्म ही विघ्न के कारण हैं। सुख-दुख के लिए अपनी जिम्मेवारी हम समझें। परमात्मा हमें सत्कर्म करने का सही ज्ञान देते हैं, विकर्म भस्म करने की योगविधि सिखाते हैं लेकिन करना तो हमें स्वयं ही है। ये ही कारण है कि जीवन के अंत में जीवनभर किये हुए कर्मों का लेखा-जोखा हर व्यक्ति की बुद्धि के सामने आता है और महसूस होता है कि हम खुद ही अपने सुख-दुख के कारण हैं। हमें परमात्मा से या अन्य किसी से दुख दूर होने की और सुख बरसाने की आश रखने की जरूरत नहीं है।

संतों ने, योगियों ने, ऋषियों ने अपनी साधना से सिद्धियाँ पायीं। उनमें से कुछ सिद्धियों का प्रयोग कर उन्होंने भक्तों के दुख दूर किये। तो लोग धीरे-धीरे उन्हों से ही दुख दूर करने की आशा करने लगे। उन्हों पर आधारित होने लगे। उन्हों से ही कृपा, शक्ति, आशीर्वाद माँगने लगे, बजाय कि उन्हों जैसा योगी बनें। परमात्म भक्ति भी आजकल इच्छापूर्ति, स्वार्थ सिद्धि के लिये ही करने लगे हैं।

परमपिता परमात्मा तो हमें सत्य ज्ञान देते हैं। हम हिम्मत करते हैं तो मदद भी करते हैं। हमें उनसे डरना नहीं है, ना उनसे माँगना है। हमें उनकी शिक्षाओं पर और उनकी श्रेष्ठ मत पर चलना है। यही समय है स्वयं को परमात्म प्यार से भरपूर करने का। ■■■

जीत सच्चाई की

■■■ ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश तिवारी, बलिया (उ.प्र.)

रात के बारह बजे थे। सारा शहर निद्रा देवी के आगोश में था। गोपाल धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था मानो उसके पैरों में भारी पत्थर बंधे हों। चारों ओर देखते हुए सोच रहा था, इसी शहर में जन्मा, पला-बढ़ा, आज शहर को छोड़ने के लिए विवश कर दिया गया। अचानक उसके पैर रुक गये, सामने ही रेलवे स्टेशन था। उसने मीठे बाबा को याद किया और रेलवे स्टेशन की तरफ बढ़ गया। प्लेटफार्म पर पहुंचा ही था कि अचानक एक ट्रेन आकर रुक गयी। वह जाकर ट्रेन में एक सीट पर बैठ गया। बोगी में एक-दो आदमी ही बैठे थे। ट्रेन चल पड़ी अपनी मंजिल की ओर। गोपाल ने पीछे छूट रहे शहर को निहारते हुए एक लम्बी सांस ली और विचारों में खो गया.....

उसके परिवार में पिता जी, माता जी और एक छोटा भाई था। खुशहाल परिवार था। पिता जी की किराने की दुकान अच्छी-खासी चलती थी। गोपाल भी दुकान पर जाया करता था। पिता जी हमेशा समझाते थे, 'बेटे, जीवन में आगे बढ़ना है तो मेहनत और ईमानदारी चाहिए। व्यवसाय में सच्चाई का बहुत महत्व होता है। इससे क्रेडिट बनती है, जो दुकानदार की मुख्य पूँजी होती है।'

समय ने करवट ली और उसके पिता जी ने शरीर छोड़ दिया। अब लौकिक परिवार की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ गयी। नियमित रूप से दुकान पर जाते हुए वह पिता जी के बताये रास्ते पर चलने लगा। अपनी माँ की हर बात को भी श्रद्धा से मानता क्योंकि उसे सदैव याद रहता कि 'जो ना माने बड़ों की सीख, थाम कटोरा मांगे भीख।' छोटे भाई को भी स्नेह करता, उसकी हर आवश्यकता का ख्याल रखता।

एक दिन रविवार को वह टहलने जा रहा था कि अचानक उसकी नजर ने कुछ सफेद वस्त्रधारी भाई-बहनों को देखा। उधर बढ़ा तो देखा कि वे चित्रों द्वारा कुछ समझा रहे थे। पता चला कि ब्रह्माकुमारी आश्रम से सम्बन्धित हैं। गोपाल भी चित्रों पर समझने लगा, उसे बहुत अच्छा लगा, उनकी दिव्यता को देख कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने निश्चय किया कि हर रविवार को आश्रम पर जायेगा और जीवन को दिव्य बनाने का पुरुषार्थ करेगा।

अचानक एक अफवाह फैली कि 'नमक' की भारी कमी होने वाली है। यह सुनकर लोग नमक खरीदने के लिए टूट पड़े। दुकानदारों ने माल का संग्रह कर लिया और दाम बढ़ा दिये। गोपाल अपनी दुकान का सारा काम स्वयं करता था किन्तु उसकी माँ ने छोटे भाई को समझाया कि बेटे, दुकान पर तुम भी जाया करो, क्या पता गोपाल हेरा-फेरी करता हो। माँ की बात सुनकर छोटे भाई सुरेश ने कहा, भैया, इस बार माल लेने मैं खुद जाऊँगा, आप दुकान सम्भालो।

उस दिन दुकान पर अचानक से भीड़ लग गयी। अधिकतर ग्राहक नमक के ही थे क्योंकि दूसरे दुकानदारों ने नमक का पाँच गुना भाव कर दिया था किन्तु गोपाल ने भाव नहीं बढ़ाया। परिणामस्वरूप शाम तक उसका सारा नमक बिक गया।

शाम को जब घर गया तो गोपाल बहुत खुश था क्योंकि उस दिन बिक्री अच्छी हुई थी। सुरेश भी घर आ गया था। माँ ने पूछा, गोपाल, आज बहुत खुश हो? गोपाल ने कहा, हाँ माँ, आज बिक्री अच्छी हुई, सारा नमक बिक गया। सुरेश ने पूछा, कितने में बेचा भइया? गोपाल ने बड़ी सहजता से जवाब दिया, खुदरा मूल्य पर। यह सुनते ही सुरेश और माँ दोनों चीख पड़े, क्या किया तुमने, सारा माल लुटा दिया? गोपाल मुसकराते हुए

बोला, लुटाया नहीं, पैसे लेकर दिया। पिता जी कहते थे, 'बेटे, कभी बेईमानी नहीं करना, ईमानदारी से बरक्कत होती है।' इस बात ने आग में घी का काम किया और दोनों माँ-बेटा गोपाल पर टूट पड़े, 'आज तूने हजारों का नुकसान कर दिया। तुझे सजा मिलनी ही चाहिए।' माँ-बेटा मिलकर लात-घूँसे और डंडे से गोपाल की धुनाई करने लगे। माँ ने चीखकर कहा, निकल जा मेरे घर से, दुष्ट, यहाँ तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। गोपाल हक्का-बक्का था! क्या यही मेरी माँ है, जिसे मैं देवी की तरह पूजता था? क्या यही मेरा भाई है, जिसका खुद से भी ज्यादा ख्याल रखता था, क्या ईमानदारी का यही परिणाम है? सोच ही रहा था कि अचानक माँ ने उसे धक्का देते हुए दरवाजे से बाहर निकाल दिया और चीखते हुए कहा, निकल जा, इस शहर में कभी अपनी मनहूस शक्ल मत दिखाना।

गोपाल बहुत दुखी था। सोचा, जब अपनों ने बेईमानी के चन्द पैसों के लिए यह रूप दिखाया तो परायों से क्या उम्मीद होगी? वह आश्चर्य में डूबा विचार कर रहा था कि क्या एक सगी माँ ऐसी भी क्रूर हो सकती है? एक सगा छोटा भाई, बड़े भाई पर हाथ उठा सकता है? लानत है ऐसी दुनिया को, मुझे नहीं रहना। अचानक उसे महसूस हुआ कि कोई उसके सर पर हाथ फेरते हुए कह रहा है, 'तुम चिन्ता क्यों करते हो, मैं जो बैठा हूँ।' स्नेह के इस बोल ने उसके हृदय को प्रकम्पित कर दिया। उसकी आँखों से गंगा-जमुना की धारा बहने लगी। ये आँसू प्रेम के थे। विकट परिस्थितियों में जब उसके अपनों ने धक्का दिया तो शिवबाबा ने उसे गले लगा लिया था।

अचानक ट्रेन झटके से रुकी तो गोपाल की तंद्रा भंग हो गई। यह कोई स्टेशन था। यात्री एक-एक करके उतर रहे थे। पता चला कि ये ट्रेन अब और आगे नहीं जायेगी। गोपाल भी उतर गया। अब उसका मन हल्का हो चुका था। स्टेशन की घड़ी ने 4:30 बजाये। वह शिवबाबा से रूहरिहान करने लगा, 'बाबा, मैं आपका था, आपका हूँ और आपका ही होकर रहूँगा। यह जीवन आपके हवाले है। बस, एक ही आग्रह है कि आप मेरा हाथ और साथ कभी न छोड़ना। मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूँगा। बस, संकेत करते रहना.....।'

गोपाल को भूख का अनुभव हुआ। रात को भी खाना नसीब नहीं हुआ था। जेब में हाथ डाला तो खाली थी। पैसे आते भी कहाँ से? दुकान का सारा हिसाब तो वो रोज माँ को देता था। जरूरत पड़ने पर माँ से ही माँग लेता था। अचानक उसकी दृष्टि एक व्यक्ति पर गई जो बेचैन आँखों से चारों तरफ देख रहा था, उसके पास कुछ सामान भी था। गोपाल समझ गया कि यह किसी कुली को ढूँढ़ रहा है। गोपाल ने उस व्यक्ति के पास जाकर पूछा, क्षमा कीजिए, शायद आप किसी को ढूँढ़ रहे हैं। व्यक्ति बोला, कुली ढूँढ़ रहा हूँ, मुझे टैक्सी स्टैन्ड तक जाना है। चलिये, कहते हुए गोपाल उसके सामान की तरफ बढ़ा ही था कि व्यक्ति ने कहा, ठहरो, पहले बताओ कि क्या लोगे? गोपाल मुसकराते हुए बोला, जो खुशी से देंगे, ले लूँगा। गोपाल ने सामान पहुँचा दिया तो उन्होंने गोपाल की तरफ बीस रुपये का नोट बढ़ाते हुए कहा, ठीक है न? जी कहकर गोपाल वहाँ से हट गया। थोड़ी दूर पर उसे फल की दुकान दिख गयी। वहाँ से केले खरीदे, अच्छी तरह से धोए, फिर चबूतरे पर बैठ कर पहले शिवबाबा को धन्यवाद के साथ भोग लगाया और शिवबाबा के साथ ही प्रसाद खाया। तब तक 5:30 बज गये थे।

वहाँ से उठकर, गहरी साँस लेते हुए वह आगे बढ़ गया। कुछ ही दूरी पर उसे एक शिवालय दिखायी दिया। वह मुसकराया, वाह बाबा! आपने शरणागत को स्थान दे ही दिया। मंदिर बहुत भव्य था। गेट पर पहुँच कर उसने देखा कि अभी तक मंदिर की सफाई नहीं हुई है। इधर-उधर नजर दौड़ाई तो कोने में रखी एक झाड़ू, बाल्टी और लोटा दिखाई दे गए। गोपाल ने पहले सारा प्रांगण साफ किया। फिर अन्दर से मंदिर धोया और पूजा-पात्रों को राख से साफ कर मंदिर में सजा दिया। वो आकर अभी मन्दिर के बाहर चबूतरे पर बैठा ही था कि एक बुजुर्ग व्यक्ति ने मन्दिर में प्रवेश किया। गोपाल समझ गया कि ये जरूर मंदिर के पुजारी होंगे। तभी उनकी नजर भी गोपाल के ऊपर पड़ी। वे आश्चर्य से कभी मंदिर को, तो कभी गोपाल को देख रहे थे। फिर पूछा, बेटे, क्या यह सफाई तुमने की है? गोपाल प्रणाम करते हुए बड़ी नम्रता के साथ

बोला, जी महाराज जी। पुजारी जी बहुत खुश होते हुए हाथ उठाकर बोले, वाह! भोलेनाथ, आपने मेरे सहयोग के लिए बच्चा भेज ही दिया। फिर गोपाल की तरफ मुखातिब होते हुए बोले, असल में जो लड़का साफ-सफाई का काम करता है वो कल ही अपने गाँव चला गया। मेरी तबियत भी ठीक नहीं है। बहुत चिन्ता थी कि सुबह भक्त लोग आयेंगे तो क्या होगा, ऐसे कहते हुए उसने गोपाल को गले से लगा लिया।

कुछ देर बाद ही भक्तों का रेला आने लगा। बाद में जब भक्तों का आना बन्द हो गया तो पुजारी जी ने कहा, बेटे, प्रसाद मंदिर में रखे पात्र में इकट्ठा कर मेरे पीछे-पीछे आओ और मंदिर का दरवाजा बन्द कर दो। मंदिर के बगल में ही मंदिर की एक धर्मशाला थी। वहीं पुजारी जी का आवास था। वहाँ पहुँच कर पुजारी जी ने कहा, तुम्हें भूख लगी होगी, तब तक प्रसाद ग्रहण करो। फिर पूछ बैठे, क्या तुम्हें भोजन बनाना आता है? गोपाल तपाक से बोला, जी महाराज जी। सुनकर पुजारी जी बहुत खुश होकर बोले, फिर तो ठीक है, दोपहर और रात का भोजन तुम ही बनाना। यहाँ सब सामान प्रचुर मात्रा में भोलेनाथ ने दिया है, किसी चीज की कमी नहीं है। फिर अचानक से बोल पड़े, बेटा, मैं तुम्हारा परिचय पूछना तो भूल ही गया, कौन हो? कहाँ से आये हो? गोपाल ने बड़ी नम्रता से कहा, महाराज जी, मेरे शरीर का नाम गोपाल है, शिवबाबा का ही बच्चा हूँ इसलिए बाबा की सेवा में रहना चाहता हूँ। पुजारी जी गद्‌गद् हो गये।

दो दिन बीत गये। गोपाल के पास पहने हुए वस्त्रों के अलावा कुछ नहीं था। हालांकि मंदिर में सब था। पुजारी जी ने कह दिया था कि जो जरूरत हो, बिना पूछे लेकर इस्तेमाल करना किन्तु गोपाल को यह अच्छा नहीं लगा। दोपहर के भोजन के बाद पुजारी जी आराम करते थे। गोपाल निकल गया शहर की ओर। कुछ दूर जाने के बाद देखा कि एक ट्रक से कुछ लोग सामान उतार रहे हैं। गोपाल खड़ा हुआ तो मालिक ने पूछा, क्या चाहिए? गोपाल ने बड़ी ही नम्रता से कहा, मान्यवर, अगर आपकी अनुमति हो तो मैं भी काम करूँ? उसने गोपाल को नीचे से ऊपर तक देखा और बोला, ठीक है, करो। इस तरह गोपाल ने कुछ दिन काम किया तो उसके पास इतने पैसे इकट्ठे हो गये जो वह अपनी दिनचर्या के लिए कपड़े व आवश्यक सामान खरीद सका।

मंदिर में हर रविवार को पुजारी जी प्रवचन करते थे। एक दिन धीरे-से गोपाल ने कहा, महाराज जी, अगर आपकी अनुमति हो तो मैं भी कुछ बोलूँ। हाँ-हाँ कहते हुए पुजारी जी ने गोपाल को अनुमति दी। पुजारी जी मुख्य आसन पर थे। गोपाल ने नीचे आसन पर बैठ कर पहले एक भजन सुनाया तो जिज्ञासुओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया। फिर क्या था, अब तो हर रविवार को गोपाल का प्रवचन होने लगा। सबसे पहले उसने परमात्मा का यथार्थ परिचय विस्तार से दिया जिसे जिज्ञासुओं ने बहुत पसन्द किया। धीरे-धीरे जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ने लगी और मंदिर का चढ़ावा भी बढ़ने लगा। पुजारी जी बहुत खुश थे।

एक रविवार को उस नगर के सेठ जी और सेठानी जी ने भी प्रवचन में भाग लिया। सेठ जी गोपाल को बड़ी गहरी नजरों से देखते हुए कुछ स्मरण कर ही रहे थे कि अचानक उनको याद आ गया, अरे! यह तो वही लड़का है जिसने स्टेशन से उनका सामान पहुँचाया था। सेठ जी गोपाल के प्रवचन से बहुत ही प्रभावित हुये थे। सेठानी भी अपलक उस बच्चे की सौम्यता को निहार रही थी। प्रवचन समाप्त होते ही सेठ जी ने पुजारी से गोपाल के बारे में पूछा, तो पुजारी जी ने गोपाल को इशारे से अपने पास बुलाया। गोपाल भी सेठ जी को देखकर चौंक गया। सेठ जी ने गोपाल से पूछा, तुम्हारी शिक्षा कहाँ तक है? गोपाल ने कहा, ग्रेजुएट हूँ। यह सुनते ही सेठ जी खुश होते हुए बोले, महाराज जी, इस बच्चे को मुझे दे दीजिये। पुजारी जी चौंक गये। तभी सेठ जी ने कहा, मेरी फैक्ट्री में एक मैनेजर की जगह खाली है। मुझे ऐसे ही मेहनती, ईमानदार, सच्चे लड़के की तलाश थी, जो अब पूरी हो गयी। गोपाल पुजारी जी के असमंजस को जान कर बोला, महाराज जी, मैं नौकरी करते हुए भी भोले बाबा की सेवा नहीं छोड़ूँगा, मेरी दिनचर्या यही रहेगी। तब सेठ जी खुश होते हुए बोले, तुम्हें फैक्ट्री की ओर से 25000 रुपये मासिक वेतन के साथ एक फ्लैट तथा आने-जाने के

लिए एक मोटर साइकिल मिलेगी। ड्यूटी 10 बजे से शाम 5 बजे तक होगी। गोपाल ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

कहते हैं, दिन बीतते देर नहीं लगती। देखते-देखते एक वर्ष पूरा हो गया। इधर पुजारी जी भी खुश थे और सेठ जी भी खुश थे क्योंकि गोपाल अपना कर्त्तव्य बखूबी निभा रहा था। सेठ जी ने हिसाब लगाया तो पाया कि उनकी फैक्ट्री उस वर्ष दोगुने फायदे में थी। सेठ जी को अपने चुनाव पर गर्व महसूस हुआ।

एक दिन मंदिर में चहल-पहल थी। पता चला कि सेठ जी का जन्मदिन है। वे प्रतिवर्ष दरिद्र नारायण के लिए भण्डारा रखते थे और वस्त्र भी दान करते थे। गोपाल भी व्यवस्था में लगा था। दरिद्र नारायण आने लगे। देखते-देखते भीड़ जमा हो गई। वस्त्र वितरण होने लगे। गोपाल एक-एक वस्त्र उठाकर बढ़ाता और सेठ जी एवं सेठानी जी देने लगे। तभी अचानक एक चीख ने सबको चौंका दिया। देखा, एक फटेहाल औरत बेटा-बेटा पुकारते हुए दौड़ी चली आ रही है। उसके पीछे एक लड़का भी है। गोपाल यह देख सन्न रह गया कि ये तो उसकी माँ और भाई हैं। तभी वह औरत गोपाल के पैर पकड़ कर रोने लगी, बेटा, मुझे सजा दो, मैंने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया, मैंने लोभ और क्रोध के भूत के वशीभूत होकर ऐसे कर्म कर दिये जो दुनिया में कोई भी माँ नहीं कर सकती। अरे, मैं तो माँ कहलाने के लायक भी नहीं हूँ, मैं पापी हूँ, मुझे जो चाहो सजा दो। यह घटना इतनी अप्रत्याशित थी कि गोपाल तो जैसे बर्फ की तरह जम गया। जब तंद्रा भंग हुई तो झुककर माँ के पैर छुये और भाई को गले लगाया।

गोपाल सम्भला, उसने टूटे-फूटे शब्दों में बोला, माँ, आप तो जननी हैं, पहले भी आप पूज्य थी, आज भी हैं और सदा रहेंगी। यह सुनते ही वह और जोर-जोर से

बेटा। हम लोग जल्दी से धनवान होने के लालच में सब कुछ गँवा बैठे। तुम सच्चे थे बेटा। चलो अब वापस चलते हैं। तुम्हें पाकर मेरा भटकना बंद हो गया। गोपाल गम्भीर होकर बोला, क्षमा करना माँ, अब लौटना सम्भव नहीं है। मैं पहले भी शिवबाबा का था, आज भी शिवबाबा का हूँ और रहूँगा। मैं आप लोगों से नाराज नहीं हूँ। उसमें भी कल्याण था। मैं तो आपका आभारी हूँ कि आपकी वजह से सम्पूर्ण रूप से बाबा का हो गया हूँ। बाबा आपका भी कल्याण एवं सहयोग करेंगे। आप सच्चे दिल से प्रण करें कि आगे से सदा सच्चाई और ईमानदारी के साथ-साथ मेहनत भी करेंगे। यह सुनकर माँ और सुरेश ने हाथ जोड़ कर कसम खाई कि हम ईमानदार होकर रहेंगे। गोपाल ने 50 हजार रुपये का चेक माँ को देते हुए कहा कि सुरेश फिर से अपना व्यवसाय आरम्भ करे, शिवबाबा जरूर मदद करेंगे।

दिन तेजी से बीत रहे थे। अब गोपाल के मन में एक ही इच्छा थी कि शिवबाबा का राजयोग केन्द्र खुले जहाँ अनेक आत्माएँ आकर अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ कर सकें। उसने पता लगाया तो मालूम हुआ कि वहाँ से करीब 25 कि.मी. की दूरी पर एक राजयोग केन्द्र है।

एक सुबह उसने पुजारी जी से निवेदन किया कि अगर आपकी सहमति हो तो बगल की धर्मशाला में ही एक राजयोग केन्द्र खुल जाये। वैसे भी वहाँ कमरे खाली रहते थे। सुन कर पुजारी जी ने तुरन्त सहमति दी क्योंकि वे गोपाल से बहुत खुश थे।

आज गोपाल बहुत खुश था। उसकी वर्षों की मनोकामना पूर्ण जो हो गयी थी। आज बहुत चहल-पहल थी क्योंकि ब्रह्माभोजन का आयोजन जो था। सूर्य नारायण अपने पथ पर अग्रसित थे। खुशी का माहौल

दुखों से उबारा प्यारे बाबा ने

■■■ ब्रह्माकुमारी द्रौपदी, जलगाँव जामोद (महाराष्ट्र)

मेरा जन्म महाराष्ट्र में जलगाँव (जामोद) में एक साधारण परिवार में हुआ। बचपन से ही मुझमें श्रीकृष्ण की भक्ति के संस्कार थे। जन्माष्टमी के दिनों में उसे कपड़े और मुकुट पहनाती थी तथा रोज घंटा भर उसके सामने बैठ उसे कहती थी कि जब आप इस धरा पर अवतार लें तो मुझे अपनी राजधानी में दासी बनाकर रखना। मैं आपके बगीचे को पानी दूँगी।

खुदकुशी करने का विचार

सन् 1993 में मेरी शादी हुई, तब उम्र 16 साल की थी। सन् 2006 में जब उम्र 30 साल की हुई तब पति की दोनों किडनियाँ फेल हो गयीं और पति ने देह त्याग कर दिया। इससे मैं इतनी दुखी हुई कि श्रीकृष्ण पर से पूरा भरोसा उठ गया कि जिसे मैं भगवान मानती थी, उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?

मन ही मन मैं सोचती कि अब श्रीकृष्ण की तरफ कभी नहीं देखूँगी, उससे बात भी नहीं करूँगी। मैं सारा दिन रोती रहती, किसी की बात भी अच्छी नहीं लगती, दुख का विचार करते-करते डिप्रेशन में चली जाती थी। आँखों का रोना कभी बंद नहीं होता था। सोचती थी कि चारों बच्चों (तीन बेटियाँ, एक बेटा) का क्या होगा? कभी-कभी मन में विचार आता था कि बच्चों के साथ कुएँ में गिरकर जीवन समाप्त कर दूँ। कभी मन में आता कि अकेली जाकर खुदकुशी कर लूँ लेकिन फिर ख्याल आता कि बच्चों को कौन संभालेगा? माँ के बिना बच्चों का कोई नहीं होता। जीवन में सबकुछ खरीदा जा सकता है परन्तु माँ का प्यार नहीं खरीदा जा सकता। जीवन में इतना वैराग्य था कि क्या करूँ, इतनी खराब मन:स्थिति थी कि सम्भलना मुश्किल लगता था।

सभी दुख भूल गई

एक दिन सासू माँ जी के मामा हमारे घर पर आये। वे ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे हैं। सासू माँ ने उन्हें बताया कि मेरी बहू, जबसे मेरे बेटे की मृत्यु हुई है तबसे, डिप्रेशन में है। सदा रोती रहती है, क्या करें? फिर मामाजी ने मुझे ईश्वरीय ज्ञान सुनाना शुरू किया। कहने लगे कि पति के साथ तुम्हारा इतना ही पार्ट था। अपना पार्ट पूरा कर वह आत्मा चली गई। तुम आत्मा हो। परमात्मा ही सच्चा सम्बन्धी है, जो अविनाशी है। इसके बाद ब्र.कु.बहनों ने हमारे घर पर साप्ताहिक कोर्स करवाया। धीरे-धीरे मुझे सारा ज्ञान समझ में आने लगा। सासू माँ भी ज्ञान में चलने लगी। मुझे पुस्तकें पढ़ने का शौक है। एक-एक करके शिवबाबा की सभी किताबें पढ़ डालीं। अब मुझे शिवबाबा का पूरा ज्ञान समझ में आ गया है, जीवन योगी बन गया है। साल में दो बार मधुबन जाती हूँ। मेरे घर में गीता पाठशाला है जहाँ 25 मातायें मुरली सुनने आती हैं। शिवबाबा को पाकर सभी दुख भूल गई हूँ। मेरी दो बेटियाँ सेवाकेन्द्र पर रह रही हैं। सभी बच्चे और घर के सभी सदस्य पूर्ण सहयोगी हैं।

अब घर में सब सुख-सुविधाएँ हैं। शिवबाबा ने सब अच्छा-अच्छा कर दिया है। मेरा तो एक, दूसरा न कोई, इस स्मृति से मैंने सब सम्बन्ध परमपिता शिव के साथ जोड़ लिए हैं। यही शुभकामना है कि सभी आत्माओं को परमपिता शिव का संदेश मिल जाए और सभी दुखों से मुक्त हो जाएँ। मीठे-प्यारे बाबा, आपका लाख-लाख शुक्रिया करती हूँ। ■■■

हार्टअटैक डे बना वैलेंटाइन डे

■■■ ब्रह्माकुमार मोहिन्दर सिंह, डेरावाल नगर, दिल्ली

मेरी आयु 42 वर्ष है। पिछले 13 वर्षों से युगल सहित ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। अचानक 11 नवम्बर, 2018 को सुबह नहाते समय छाती में दर्द हुआ तो पिताजी और युगल समीप के हॉस्पिटल में मुझे ले गए जहाँ उन्होंने बड़े हॉस्पिटल फोर्टिस ले जाने की सलाह दी। दर्द बढ़ता जा रहा था और मुझे अनुभव हो गया था कि यह हार्टअटैक है। तकलीफ इतनी बढ़ गई कि सहन नहीं हो रही थी।

देह से अलग होने का अहसास

अचानक एक चमत्कार हुआ। मैंने देखा कि मैं ऊपर बापदादा की गोदी में हूँ और बाबा मुझे बहुत प्यार कर रहे हैं। बापदादा के बोल थे, बच्चे, कुछ नहीं हुआ है, तुम्हें शरीर छोड़ मेरे पास आना है इसलिए ड्रामा में यह खेल रचा हुआ है। बस, मैं हल्का हो गया और निश्चिंत हो बापदादा की गोदी में सर रख लेटा रहा। बाबा मुझे इतना प्यार कर रहे थे, इतना प्यार कर रहे थे, इतना प्यार कर रहे थे, बात मत पूछो। ऐसे प्यार का अनुभव मैंने पिछले 13 वर्षों में कभी नहीं किया था। मुझे याद है, ऐसा लग रहा था कि मैं दो हूँ। ऊपर बापदादा की गोद में प्यार के सागर में डूबा हुआ हूँ और नीचे तड़प रहा हूँ। वहाँ बहुत रोशनी थी जैसे कि मैं और बापदादा सूर्य के एकदम पास हैं। ऐसा अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था।

अब सौ प्रतिशत स्वस्थ हूँ

हम हॉस्पिटल पहुँच चुके थे और जैसे ही मुझे कार से उतरने को बोला गया, ऊपर के सारे दृश्य खत्म हो गये। मुझे अन्दर ले जाया गया और डॉक्टर्स ने अपना काम शुरू कर दिया। मैं लेटा-लेटा सब याद कर रहा था और इन्तजार में था कि अब शरीर छूटेगा और मैं बाबा के पास चला जाऊँगा। बाबा का वो प्यार मुझे खींच रहा था। फिर से वैसा अनुभव करने के लिए मैं तड़पने लगा। डॉक्टर्स ने अपना काम करके मुझे सी.सी.यू. में भेज दिया। मेन आर्टरी में एक स्टंट डाला था। सी.सी.यू. में उस प्यार के सागर के साथ हुए अनुभव के बारे में सोच रहा था कि युगल मिलने आए। मैंने उन्हें बताया कि बाबा ने आज कितना प्यार किया। बताते-बताते आँसू थम नहीं रहे थे। अभी भी अनुभव लिखते समय नहीं थम रहे हैं। मेरे लिए 11 नवम्बर, 2018 हार्टअटैक डे न होकर जैसे वैलेंटाइन डे हो गया। अब मैं सौ प्रतिशत स्वस्थ हूँ। इतनी तकलीफ में बापदादा ने इतनी मदद की, इतना प्यार दिया, उसके लिए बापदादा का दिल से शुक्रिया।

निकल गया मृत्यु का भय

इस घटना के बाद मेरा बापदादा पर निश्चय बहुत बढ़ गया है कि बस बाबा के बन कर रहो तो बाबा मौके पर मदद के लिए आ जायेगा। अपने बच्चों को कोई बाप तकलीफ में नहीं देख सकता। तीन दिन बाद जब घर आया तो मन ही मन बाबा से पूछा कि बाबा, यह सब क्या था? बाबा बोले, बच्चे, एक न एक दिन काल आना जरूर है इसलिए हर पल ऐसे समझो कि मुझे शरीर छोड़ बाबा के पास जाना है, इससे अंत मति सो गति हो जायेगी। बाबा ने प्रैक्टिकल में यह शिक्षा दे दी। अब मृत्यु का डर भी निकल गया है। ■■■

प्रसन्न व्यक्ति वह है जो निरंतर स्वयं का मूल्यांकन एवं सुधार करता है जबकि दुखी वह है जो दूसरों का मूल्यांकन करता रहता है

सम्भालिए अपने संग को

■■■ ब्रह्माकुमारी डॉ.तृप्ति, शान्तिवन

कहा जाता है, जैसा संग वैसा रंग। यदि किसी व्यक्ति के बारे में जानना हो तो उसकी संगत को देखो। हम आत्माओं की मन-बुद्धि जब परमात्म याद को भूल किसी अन्य की ओर आकर्षित होती है तो वह संगदोष कहलाता है। केवल एक परमपिता परमात्मा ही सर्वगुणों के सागर हैं। उनके संग से ही हम सर्वगुण सम्पन्न बनते हैं। शेष कोई भी संग का रंग हमें संगदोष में लाकर आत्मिक अवनति का कारण बनता है। संगदोष किस-किस तरह से हमें लग सकता है तथा उससे बचने का मार्ग क्या है, इस पर आज हम चर्चा करेंगे –

देहभान रूपी संगदोष

स्वयं को देह समझना या औरों के प्रति दैहिक दृष्टि, वृत्ति रख उनसे व्यवहार करना, यह सभी विकारों की जड़ है। इसी ने हमें द्वापरयुग से उतरती कला में लाया है। इससे बचने हेतु स्वयं को आत्मा समझ, आत्मिक दृष्टि रख व्यवहार में आने का अभ्यास करना है।

सम्बन्ध-सम्पर्क का दोष

स्थूल रूप से या सूक्ष्म बुद्धि रूप से मित्र-सम्बन्धियों आदि के प्रति मोहवश लगाव-झुकाव होना, किसी की विशेषताओं के प्रभाव में आ जाना या किसी की कमी-कमजोरियों को देख उनके प्रति नफरत आदि नकारात्मक भाव रखना, ये सब दोष भी आत्मा को उजला नहीं होने देते। इनसे बचने हेतु सर्व सम्बन्धों का रस एक परमपिता परमात्मा से अनुभव करना है। यदि किसी एक सम्बन्ध से भी परमात्म प्यार छूट गया तो वह सम्बन्ध मन-बुद्धि को खींचता रहेगा।

वस्तुओं में आकर्षण रूपी संगदोष

किसी भी वस्तु में आसक्ति होना या जरूरत न होने पर भी उसका अभाव महसूस करना या सुख-सुविधाओं में आत्मा का फँस जाना, वस्तुदोष है। इस दोष से बचने के लिए बार-बार बाबा से की हुई प्रतिज्ञा कि जहाँ बिठाओ, जो खिलाओ, जैसे रखो, को स्मृति में लाते रहें।

अन्नदोष

अत्यधिक चाय-कॉफी पीना, तली हुई और अधिक मिर्च-मसालेदार भोजन सामग्री, गरिष्ठ खाद्य अचार आदि खाना अन्नदोष माना जाता है। जरूरत से ज्यादा खाना, आसक्ति से खाना, छिपाकर खाना, बार-बार खाना, पाप की कमाई से खरीदा हुआ खाना, अपवित्र मनसा वाले का पकाया हुआ खाना – ये भी अन्नदोष माने गए हैं। इनसे बचने के लिए शुद्ध कमाई से बना, प्रभु स्मृति में, सादा, सात्विक, शिवबाबा को स्वीकार कराया हुआ भोजन खाएँ।

बीती बातों का संगदोष

बीती हुई अच्छी-बुरी, सुखद-दुखद बातों का बार-बार स्मरण, वर्णन भी संगदोष है। इसके साथ-साथ वर्तमान में होने वाले विकर्मों की छाप भी शिवबाबा की याद में बुद्धि को एकाग्र होने नहीं देती। अत: बीती सो बीती कर, शिवबाबा को सच्चाई से प्रतिदिन का पोतामेल देते हुए इस दोष से मुक्त हो जाएँ।

व्यर्थ संकल्पों का संगदोष

जिस समय जिन संकल्पों की आवश्यकता नहीं या जो संकल्प निष्फल हैं, चाहे वर्तमान परिस्थिति या भविष्य की कल्पनाओं के हों, ऐसे संकल्प भी उन्नति में विघ्न रूप बनते हैं। इसके लिए निरन्तर महान विचारों में रमण करने का अभ्यास बनाएँ तथा विचारों पर नियन्त्रण शक्ति को बढ़ाएँ।

पुरानी आदतों या स्वभाव-संस्कार का संगदोष

पुराने आसुरी स्वभाव-संस्कार या आदतें हममें नहीं

होने चाहिएँ। फिर भी बार-बार ये कर्म में आ जाते हैं। इस प्रकार ये हमें ईश्वरीय संग से दूर कर बुराई के संग में ले जाते हैं। ऐसी आदतों और संस्कारों को पहचान कर, दृढ़ता से बदलकर, ईश्वरीय आदतें विकसित करें।

डिजीटल वर्ल्ड का संगदोष

जरूरत न होने पर भी टी.वी.,मोबाइल, इन्टरनेट, सोशल मीडिया आदि का इस्तेमाल करना, अत्यधिक समय तक इस्तेमाल करना अथवा सेवार्थ के बजाए इन्द्रियों की तुष्टि के लिए उपयोग करना भी संगदोष है, जो पतन के निमित्त बनता है। इनका इस्तेमाल कम से कम हो और परमार्थ के लिए ही हो।

सेवा में सफलता व अपनी विशेषताओं का संगदोष

अपनी विशेषताओं का अभिमान व योग के समय भी सेवाओं में बुद्धि का भटकना, परमात्मा से योग तोड़ देता है। इससे बचने हेतु स्वयं को निमित्त समझ, करनकरावनहार करा रहा है, यह स्मृति पक्की करते जाएँ।

प्रकृति का संगदोष

यदि किसी विशेष स्थान पर जाने या बैठने से ही योग लगता है, वहाँ न जा पाएँ तो बुद्धि में हलचल होती है, संकल्प चलते हैं, यह भी संगदोष की निशानी है। हमें चलते-फिरते, उठते-बैठते, जहाँ हैं, जिस परिस्थिति में हैं, वहीं शिवबाबा की याद में रहने का अभ्यास करना है।

उपरोक्त सभी तरह के संगदोष मन-बुद्धि को भटकाते हैं। भटकाव से बचने के लिए हमें कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर बढ़ानी है। साथ ही त्याग, तपस्या और वैराग्य का वातावरण निर्मित करना है। त्याग देहभान का, तपस्या मनमनाभव रहने की तथा वैराग्य सम्पूर्ण पुरानी दुनिया से, दुनियावी लोगों से व वस्तुओं से रखना है। ■■■

श्रद्धांजलि

बापदादा की अति स्नेही, विश्व सेवाधारी ब्रह्माकुमारी इन्द्रा बहन जी, जिनके युगल भ्राता जगदीश चन्द्र गोयल इंडियन फारेन सर्विस के अन्तर्गत जापान में कार्यरत थे। सन् 2000 में आपको जापान में ईश्वरीय ज्ञान मिला और तभी से जापान की ईश्वरीय सेवाओं में विशेष सहयोगी बनी। आदरणीया दादी जानकी जी तथा दादी रुक्मिणी जी (दिल्ली) की आप विशेष स्नेही आत्मा थी। दिल्ली (नरेला) सेवाकेन्द्र की सेवाओं में भी आपका विशेष सहयोग रहा। दिनांक 16-07-2019 सत्गुरुवार को पुराना शरीर छोड़ आपने बापदादा की गोद ली। ऐसी सर्व स्नेही, महान आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्यारे-प्यारे बापदादा की अति स्नेही, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मधुबन निवासी कैलाश माता (सुन्दरलाल भाई) अपनी दो लौकिक बच्चियों – कुसुम बहन और सुमन बहन सहित समर्पित रूप से मधुबन बेहद यज्ञ में 1986 से सेवायें देते रहे हैं। कुसुम बहन ने झारखण्ड के बोकारो शहर में बहुत अच्छा सेवाओं का विस्तार किया है। सुन्दरलाल भाई ने मधुबन में ही अपना पुराना शरीर छोड़ा था। दिनांक 27-4-19 प्रात: 3.20 बजे अहमदाबाद में कैलाश माता अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। आपकी लौकिक आयु 83 वर्ष थी। ऐसी सर्व स्नेही, महान आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

कलियुग की कालिमा के पीछे छिपा है स्वर्णिम भोर

■■■ ब्रह्माकुमारी चेतना, राजकोट (मेहुल नगर)

कलियुग का प्रभाव चारों ओर बढ़ता जा रहा है। विज्ञान के नये-नये आविष्कारों का बोलबाला है, सुख-सुविधा के साधनों की चरम सीमा है। किन्तु, इन सबकी वृद्धि के साथ, घात और प्रतिघात भी दिनोंदिन बढ़ रहे हैं। विश्व के हालात विनाश-लीला का दृश्य दिखा रहे हैं। माया की काली छाया हर ओर मंडरा रही है। पाँच विकारों का प्रकोप हर दिशा में विडम्बनाओं को बढ़ा रहा है, परिणामस्वरूप, मनुष्य शान्ति के लिये मारे-मारे फिर रहे हैं। देहभान का दानव अपना दाँव लगा रहा है। बारूद के ढेर लगे हुए हैं। प्रकृति रौद्र रूप दिखा रही है। हर चीज में नकल, दिखावा और धोखेबाजी है। चारों ओर दुख, अशान्ति, हाहाकार, लड़ाई, झगड़ों का बाजार गर्म है। अनिद्रा और चिन्ता से मानव उदासी का दास बन गया है। क्रोध और ईर्ष्या के अंगारे हर आँख से अविराम बरस रहे हैं। अनेक प्रकार की उलझनों में उलझा हुआ मानव दुख की आह से सिसक रहा है। मानव जीवन मुरझाए हुए सूखे पेड़ जैसा नजर आ रहा है।

दुखों के पहाड़ टूट रहे हैं। इंसानियत खोकर इंसान गम की खाई में गिर रहा है। राग-द्वेष ने उसे रोगी बना दिया है। आये दिन नई-नई बीमारियाँ जन्म ले रही हैं। लोभ-लालच की आग सुलग रही है, विकारों के जहरीलें साँप विश्व को डस रहे हैं। भोगों की भोगनाएँ असह्य हो रही हैं। भक्ति के साथ-साथ छल, कपट, प्रपंच, आडंबर आदि अति में जा रहे हैं। सूर्य आग बबूला हो रहा है। सम्प्रदाय, मठ, पंथ बढ़ रहे हैं। अधर्म की ध्वजा फहर रही है। खून, हत्या, आतंकवाद, जातिवाद तीखे हो रहे हैं। मेरे-मेरे के मोह ने मानव को अंधा बना दिया है। परिवार टूटकर छिन्न-भिन्न हो गये हैं। भाई-भाई को; बच्चा, बाप को मार रहा है। माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजा जा रहा है। बच्चियों की इज्जत खतरे में है। कब किसका अपहरण हो जाये, कुछ पता नहीं। अनाज और पानी पाउच में बिक रहे हैं। बच्चे-बच्चियों ने सारी मर्यादायें तोड़ दी हैं। देश-देश लड़ रहे हैं। मानव, पैसों के पीछे पागल हो गया है। यह दुनिया कुम्भीपाक नर्क बन गयी है।

यही धर्मग्लानि और विश्व परिवर्तन की मंगल घड़ी है। भगवान के वायदा निभाने पृथ्वी पर आने का सुहाना समय है। क्या आपको नहीं लगता कि ये वही समय है जब भगवान ने स्वयं अवतरित होकर, गीता ज्ञान सुनाकर, विकारों रूपी कौरवों का संहार किया था और परमात्मा से प्रीतबुद्धि पांडवों को स्वर्ग का राज्य-भाग्य प्रदान किया था। साथ-साथ विज्ञान गर्वितों का अंत किया था। महाभारत काल की पुनरावृत्ति और परमात्म अवतरण के गूढ़ राज को जानने और सुख-शान्ति भरे स्वर्णिम भोर रूपी वर्से को प्राप्त करने के लिए ब्रह्माकुमारीज की ओर से आपको हार्दिक निमंत्रण है।■■

दुनिया में लोग बुद्धिमान लोगों की प्रशंसा करते हैं,
धनवानों से ईर्ष्या करते हैं, शक्तिशाली से डरते हैं,
लेकिन विश्वास केवल चरित्रवानों पर करते हैं।

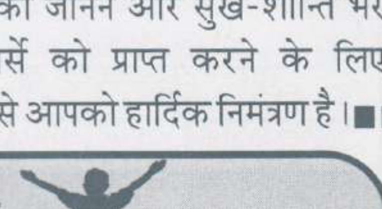

आइये, क्रोध को जीतें

■■■ ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, रोहतक (हरियाणा)

आज का मानव जीवन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, अविश्वास, अशान्ति, हिंसा, मारपीट, झूठ, स्वार्थ, धोखाधड़ी आदि विकारों में जल रहा है। ये विकार हमारी सुख-शान्ति को नष्ट कर रहे हैं। कामवासना के बाद सबसे प्रबल वेग क्रोध का है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आ जाता है। यह एक भूत के समान है। जिस पर भी यह सवार हो जाता है उसको बरबाद करके ही छोड़ता है।

क्रोध में हो जाता है हृदयाघात

क्रोध में आदमी का विवेक नष्ट हो जाता है। वह पागलों जैसा व्यवहार करता है। उसका बी.पी.बढ़ जाता है। स्नायुतन्त्र प्रभावित होता है व आँखें लाल हो जाती हैं। शरीर काँपने लगता है। टेन्शन, अल्सर, कब्ज, श्वसन जैसी बीमारियों में क्रोध भी एक कारण है। इससे आदमी अल्पायु भी हो जाता है। क्रोधी से सब दूर भागते हैं। वह दूसरों की नजरों में गिर जाता है। क्रोध बुद्धि व शरीर दोनों को नष्ट कर देता है। इससे हृदयाघात भी हो सकता है। कमजोर आदमी ही ज्यादा गुस्सा करता है क्योंकि वह डरपोक होता है। बलवान व धैर्यवान व्यक्ति कभी भी क्रोध नहीं करता है।

क्रोध का फल है पश्चाताप और आत्मग्लानि

अहंकारी आदमी निर्बल होने के कारण चिड़चिड़ा हो जाता है। वह बगैर सोचे-समझे गलत बोल देता है, गलत फैसला कर लेता है या गलत व्यवहार जैसे गाली-गलौच, मारपीट, अपमान आदि कर देता है। कई बार तो हत्या तक कर देता है। ऐसे व्यक्ति जेल में जाकर पश्चाताप की आग में जलते रहते हैं। वे इस कदर आत्मग्लानि से भर जाते हैं कि आत्महत्या तक कर लेते हैं। अच्छा संग मिलने पर पूरे सुधर भी सकते हैं।

क्रोध करता है पारस्परिक सम्बन्धों को खराब

जिस परिवार, ऑफिस, कम्पनी या पार्टी में क्रोध का बोलबाला होगा वहाँ कलह रहेगी। पति-पत्नी, दोस्त, माँ-बाप, रिश्तेदार, पड़ोसी, कार्यालय के कर्मचारी आदि सबकी शान्ति भंग हो जाएगी। कुछ अधिकारी, माँ-बाप, अध्यापक आदि क्रोध व रोब डाल कर काम लेना चाहते हैं। इससे काम तो हो जाएगा लेकिन उनकी इज्जत नहीं रहेगी। दुर्वासा ऋषि व परशुराम के क्रोध के कारण ही महान होते हुए भी उनकी इज्जत नहीं हुई।

क्रोध की दवा है शान्ति

जब कोई काम हमारी इच्छा अनुसार नहीं होता, सोचा हुआ फल नहीं मिलता या हम किसी प्रिय चीज को खो देते हैं तो क्रोध उत्पन्न होता है। अत: ज्यादा अपेक्षाएँ न पालें, न ही ऐसी इच्छा उत्पन्न करें जो पूरी न हो सके, न ही किसी से ज्यादा लगाव रखें। जब कभी क्रोध आये तो थोड़ी देर के लिए कार्य को छोड़ दें। उस स्थान को छोड़ कर बाहर चले जाएँ। धैर्य से काम लें। जब मन शान्त हो जाये तब कार्य पुन: शुरू करें या उस व्यक्ति से बात करें। अगर क्रोध का स्वभाव बन गया तो घर, परिवार, दाम्पत्य जीवन, ऑफिस, आस-पड़ोस, मित्र सब पर कुप्रभाव पड़ेगा परन्तु सबसे अधिक नुकसान हमारा ही होगा। अत: क्रोध रूपी राक्षस को मन से निकाल दें। अगर क्रोध आये भी तो अपने आप से कहें, 'मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति ही मेरा स्वधर्म है। भगवान शिव मेरा परमपिता है, वह शान्ति का सागर है' ऐसा चिन्तन

करने से मन शान्त हो जायेगा।

क्रोध से बचाएगा धैर्य

अनमोल मनुष्य जीवन को क्रोध की अग्नि में जलाने की बजाए धैर्य के सागर में डुबकी लगायें। ठण्डे मन से सोचें। धैर्य एक महान गुण है। क्रोध की दवाई डॉक्टर, हकीम, वैद्य के पास नहीं है। यह धैर्य के रूप में हमारे ही पास है। अपनी काबलियत, हैसियत, आर्थिक, सामाजिक व मानसिक अवस्था को देखकर ही कामना करें।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी भी केन्द्र या गीता पाठशाला से जुड़ कर आप क्रोध सहित अन्य विकारों से छुटकारा पा सकते हैं। वहाँ सुख-शान्ति का पाठ पढ़ाया जाता है। आत्मा का परमात्मा से परिचय व मिलन करवाया जाता है। ध्यान लगाने की विधि बताई जाती है। अगर आप वहाँ जायेंगे तो आपके घर, परिवार में प्रेम, सुख-शान्ति की गंगा बहने लगेगी। वहाँ अनेक लोगों को क्रोध सहित अन्य विकारों से छुटकारा मिला है। जीवन में खुशहाली लौटी है। अगर आप किसी केन्द्र या गीता पाठशाला पर नहीं जा सकते तो पीस ऑफ माइंड चैनल से जुड़ कर भी लाभ उठा सकते हैं। प्रतिदिन मुरली सुनें व मनन-चिन्तन करें। इस चैनल पर अनुभवी राजयोगी भाई, दीदी व दादियों के विचार, प्रवचन, गोष्ठी, वर्कशाप आदि चलते ही रहते हैं। जीवन अमूल्य है, इसे सार्थक बनायें।

■■■

दूर नशे से रहना सीखें

■■■ महेशचन्द्र त्रिपाठी, फतेहपुर (उ. प्र.)

दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई,
नशा छोड़ने की तुमने क्यों, कसम न अब तक खायी?
सभी तरह का नशा बुरा है, हो चाहे वह जैसा,
इससे क्षति शरीर की होती, व्यय होता है पैसा।
इसके चंगुल में फंसकर, लुट जाती पाई-पाई,
दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई।।

दूर रहें बीड़ी-सिगरेट से, मदिरा से मुंह फेरें,
साथ न जाए मद्यपियों के, चाहे जितना घेरें।
गांजा-चरस-भांग ने भी है, क्षति अकूत पहुंचाई,
दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई।।

चाय और काफी सीमा से ज्यादा जो पीते हैं,
ऐसे नशेबाज भी लम्बी आयु नहीं जीते हैं।
रोगों से लड़ने की क्षमता घटती राई-राई,
दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई।।

तम्बाकू उत्पादों का जो, चर्वण करते रहते,
कैंसर ग्रस लेता है उनको, चतुर चिकित्सक कहते।
हैं कोकीन-अफीम आदि के नशे बहुत दुखदाई,
दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई।।

हेरोइन-स्मैक आदि की लत जिनको लग जाती,
लुट जाता है उनका सब कुछ, संतति ठोकर खाती।
नशामुक्त परिवार धन्य है, पाता सुयश-बड़ाई,
दूर नशे से रहना सीखें, तभी भला है भाई।।

मेरा सिर्फ एक और तुम्हारे हजार

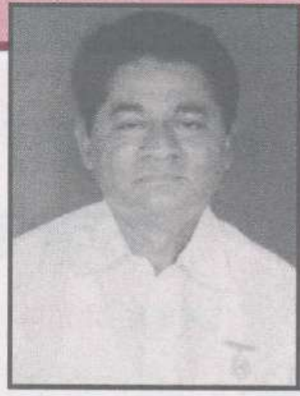

■■■ ब्रह्माकुमार अमर सिसोदिया, सफाले, वसई (मुम्बई)

जनवरी मास ब्रह्मावत्सों के लिए गहन तपस्या का मास है। जनवरी, 2019 के उपलक्ष्य में किसी कारणवश सफाले सेवाकेन्द्र के बजाए दो स्टेशन आगे 'विरार' सेवाकेन्द्र पर अमृतवेले योग कार्यक्रम होने वाला था। सफाले से कहीं भी जाने के लिए सीमित ट्रेनें चलती हैं क्योंकि बीच में 'वैतरना' खाड़ी बहती है।

रजाई नहीं, राजाई लेनी है

इकतीस दिसम्बर, 2018 की रात हर तरफ जश्न मनाया जा रहा था। गानों की आवाज और लोगों के शोरगुल के कारण मैं कुछ खास नींद नहीं कर पाया था। रात को लगभग डेढ़ बजे हमारे यहाँ से गुजरती ट्रेन का हॉर्न कानों में पड़ते ही मुझे पहला संकल्प आया, 'मुझे रजाई नहीं, राजाई लेनी है।' 'विरार' जाने के लिए सुबह पहली ट्रेन 2.14 की थी, मैं उसके लिए तैयार होने लगा। ठंड काफी थी, कर्मेन्द्रियाँ नींद की मांग कर रही थीं परन्तु मैंने मन ही मन कर्मेन्द्रियों से बात करनी प्रारम्भ कर दी। मैंने इन्द्रियों से कहा, आप सब कहीं भी पिकनिक मनाने जाओ। इस प्रकार, उन्हें मुक्त कर, मैं आत्मा भी पुरुषार्थ के लिए उनसे मुक्त हो गया। किसी भी हालत में प्रातः 4 बजे योग के लिए पहुँचना मेरे लिए एक जुनून बन गया था।

मधुबन की मानसिक सैर

मैं विरार स्टेशन पर चार बजे से बहुत पहले ही पहुँच गया। सेवाकेन्द्र तो चार बजे खुलेगा इसलिए इंतजार के समय में मैंने बाबा को याद करना शुरू कर दिया। इस समय में बाबा ने मुझे इस धरा के सबसे बड़े और सबसे पावन तीर्थ 'मधुबन' के चारों धामों की मानसिक सैर करवायी। मैं स्पष्ट महसूस कर रहा था कि मैं मधुबन के एक-एक पावन स्थान पर जा रहा हूँ। फिर मैंने स्टेशन पर आने-जाने वाले यात्रियों, रेल कर्मचारियों और रेलवे अधिकारियों को राजयोग के माध्यम से शुभभावना दी।

बाबा की मदद

अगली सुबह फिर 2.14 की ट्रेन पकड़ी लेकिन इस बार मुझे भायंदर जाना था। मैं 3.45 पर उस स्टेशन पर पहुँच गया। स्टेशन से बाहर निकलने पर एक बुजुर्ग व्यक्ति खुद मेरे पास आकर पूछने लगा, कहाँ जाना है? मेरे पता बताने के बाद वह मुझे एक गली के मुहाने पर लेकर गया और कहा, इस गली के छोर से आगे तुम्हारा स्थान है। मैंने गली में झाँका और पीछे मुड़कर बुजुर्ग को देखने लगा लेकिन वह कहीं दिखाई नहीं दिया। मैंने उसकी बताई दिशा की ओर चलना शुरू किया और आश्चर्य की बात है कि मात्र 5 मिनट में मैं सेवाकेन्द्र वाले स्थान पर पहुँच गया। यह भी प्यारे बाबा की, रास्ता बताने के लिए किसी को निमित्त बनाने की मदद थी।

मिला बहनों का सहयोग

अगली सुबह योग करने के लिए बोरीवली सेवाकेन्द्र पर गया। वहाँ 3.30 बजे ही पहुँच गया। सेवाकेन्द्र खुलने में अभी देर थी। कुछ समय इंतजार करने के बाद भी किसी को आते न देख मैं सोचने लगा कि यहाँ योग का कार्यक्रम रखा भी होगा या नहीं और फिर बाबा से कहा, बाबा, मैं पहुँच गया हूँ, अब अमृतवेला कैसे भी करके कराओ। उतने में एक भाई अपनी कार लेकर गेट पर पहुँचा, वह सेवाकेन्द्र की बहनों को योग के स्थान पर ले जाने आया था। कार में जगह न होने के बावजूद भी बहनें खुद जैसे-तैसे अडजस्ट होकर बैठीं और मुझे भी अपने साथ आराम से ले गईं और उस दिन भी मैं अमृतवेला कर पाया।

ऐसे पूरे अव्यक्त मास में जोन के अलग-अलग सेवास्थानों पर अमृतवेला करने और अनोखे अनुभव करने का मुझे जो मौका मिला, इसके लिए स्वयं को बहुत ही अधिक सौभाग्यशाली समझता हूँ और यह सब देने वाले भाग्यविधाता बापदादा का जितना शुक्रिया करूँ, जितनी बार करूँ, वह कम ही लगता है। यह बापदादा का उपकार ही है कि पुरुषार्थ का मेरा सिर्फ एक कदम लेकिन मदद के उनके हजार तो क्या उनसे भी अधिक कदम। अनगिनत धन्यवाद अति मीठे बापदादा और सभी सेवास्थानों की निमित्त बहनों का। ■■■

बीती यादों का बोझ फेंक डालो

■■■ ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

जिस व्यक्ति को बीते दिनों की यादें परेशान करती हैं, वह नई सोच, नये वक्त और नई खुशियों का एहसास कभी नहीं कर पाएगा। सोचो, बीती यादों रूपी रिसते घाव क्या कभी आगे बढ़ने दे सकते हैं? कल की पीड़ा का बोझ, पैरों में बंधे पत्थरों के समान होता है। या तो इस बोझ को घसीटते हुए चलो या फिर इससे खुद को छुड़ा लो, आजाद कर लो।

बीता हुआ कल मर चुका है। आने वाला कल अभी आया नहीं है, हमारे पास केवल आज है, हमें इसमें ही खुश रहना है। अपनी आँखों को नए सपनों से और मन को नए होसलों से भरो। बीते कल को खींच कर आज सामने रखेंगे तो डर, दुर्बलताएँ, प्रताड़नाएँ, आतंक, भेदभाव, जुल्म, अँधेरा, सूनापन आदि याद आते रहेंगे और रोते ही रहेंगे। लेकिन, दृढ़ निश्चय और बुलंद हौसलों की रोशनी आते ही ये सब गायब हो जाते हैं। पानी-सी रवानी बन कर बहना है, बेफिक्र तितली बन उड़ना है, चहकना है उस गोरैया की तरह जो जमाने की सारी उलझनों से हटकर रहती है। छलावे की खौफनाक दुनिया से दूर कहीं शान्तमय वातावरण में रहकर आज को खुशनुमा बनाना है।

हमें बीती घटनाओं, परेशानियों, कड़वाहट, बदले की भावना, ईर्ष्या, द्वेष आदि की गठरियों को फेंक देना है, तभी मन हल्का होगा और आगे बढ़ पाएँगे। जिस किसी ने भी हमारे साथ भला-बुरा व्यवहार किया है, न उससे बदला लेना है, न ही उसके गलत व्यवहार पर सवाल उठाना है। अपनी ऊर्जा को अपने निखार में लगाना है। ■■■

जिसको फूल बनाते हैं

■■■ निर्विकार नरायन श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ (उत्तर प्रदेश)

दुनिया है काँटों का जंगल, जिसको फूल बनाते हैं।
बबूलनाथ है नाम उन्हीं का, वैसा रूप दिखाते हैं।।
द्वापर युग से हुई गिरावट, दिव्य गुणों का पतन हुआ।
देवी-देवता धर्म मेरा था, वह भी कहना खत्म हुआ।।
साधू-सन्तों के सम्मुख जाकर, उनको खूब रिझाते हैं।
दुनिया है काँटों का जंगल, जिसको फूल बनाते हैं।।

ऋषि, मुनि और संत-महात्मा, उसको नहीं कोई जाना है।
पोथी और किताबें पढ़, व्यापक हर जगह बखाना है।।
दुख-अशान्ति जब बढ़ जाते, तब प्रभु की टेर लगाते हैं।
दुनिया है काँटों का जंगल, जिसको फूल बनाते हैं।।

कलि के अंत में, पांच विकारों का हर तरफ नजारा है।
खाकर उनकी मार, मनुष्य आज बना बेचारा है।।
शिव परमधाम से आते हैं, ज्ञान की घास खिलाते हैं।
दुनिया है काँटों का जंगल, जिसको फूल बनाते हैं।।

कलयुग की अंतिम घड़ियों में, संगम की अगवाई होती है।
उस घड़ी प्रभु के आने पर, दुखियों की दवाई होती है।।
तुम पावन बन मुझे याद करो, यह कह करके अपनाते हैं।
दुनिया है काँटों का जंगल, जिसको फूल बनाते हैं।।

जीवन में सफलता इतना अधिक प्रतिभा अथवा अवसर का विषय नहीं है जितना कि वह अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता एवं डटे रहने का है।

1.अमेरली- मीडिया स्नेह मिलन कार्यक्रम के बाद ब्र.कु.गंगाधर भाई, ब्र.कु.अनुज भाई, ब्र.कु.गीता बहन, ब्र.कु.भारती बहन, माहिती अधिकारी भ्राता बसिया जी, बिपिन भाई पुजारा तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **2.मुरादाबाद-** सांसद डॉ.एस.टी.हसन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.आशा बहन। **3.काशीपुर-** 'मेरा भारत-स्वर्णिम भारत' बस यात्रा कार्यक्रम के पश्चात् सूर्या फैक्टरी के महाप्रबन्धक भ्राता पंत जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पारूल बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन। **4.टूण्डला (रामनगर)-** गुरु पूर्णिमा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए भ्राता राकेश कुमार, पी.डब्ल्यू.डी.ठेकेदार भ्राता सियाराम बघेल, ब्र.कु.विजय बहन, ब्र.कु.निधि बहन तथा अन्य। **5.नैनीताल-** जिलाधीश भ्राता एस.बन्सल को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.वीना बहन तथा ब्र.कु.नीलम बहन। **6.कंडेला-** ब्र.कु.बबीता बहन तथा प्राचार्य भ्राता अमित मलिक, पौधारोपण करते हुए। **7.ध्रांगध्रा (सुरेन्द्रनगर)-** हरित भारत, स्वच्छ भारत अभियान के दौरान वृक्षों को बचाने तथा नए वृक्ष लगाने की प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु.भाई-बहनें। **8.मांडवी-कच्छ-** हरित भारत, स्वच्छ भारत अभियान के दौरान वृक्षारोपण करते हुए मेयर मेहुल भाई, भाजपा संगठन प्रमुख अरविंद भाई, ब्र.कु.शीला बहन तथा ब्र.कु.वर्षा बहन।

इतना भी कठिन नहीं है ये जीवन

■■■ ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

बहुत-से लोगों को शायद ही मैंने कभी खिलखिलाकर हँसते देखा हो। एक उदासीनता-सी हमेशा उनके मुख पर छायी रहती है। उनसे बात करो तो वे अपनी परेशानियों का इतना रोना रोते हैं कि सुनने वाला भी बेमतलब खिन्न हो जाता है।

नि:सन्देह जीवन की डगर आसान नहीं है। ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े रास्तों से प्रतिदिन हमें गुजरना होता है। कभी अपनी और कभी अपनों की तकलीफें मन को आहत करती रहती हैं लेकिन, यदि हम अपनी दिनचर्या पर नजर डालें तो यकीनन पायेंगे कि हँसने-मुसकराने के पल भी हर रोज बहुत आते हैं। कभी खाना बहुत अच्छा बन गया, कभी कोई अपना अचानक मिलने चला आया, कभी बॉस ने हमारी मामूली-सी प्रजेंटेशन की जी भरकर तारीफ कर डाली, कभी बच्चे के बहुत बढ़िया ग्रेड्स आये, ऐसी छोटी-छोटी खुशियाँ जीवन की धूप में ठंडी फुहार की तरह आती हैं। फिर कैसे कह दें कि ये संसार दुखों का सागर है? क्या पिता परमेश्वर हमें दुखों का दरिया बना कर देगा? कदापि नहीं। गुलाब के पौधे में अगर किसी को गुलाब की बजाय सिर्फ काँटे ही नजर आयें तो इसमें दोष न तो पौधे का है और न माली का, यह तो सिर्फ दृष्टिकोण का दोष है। हमारी दिक्कत यह है कि हम बड़ी-बड़ी समस्याओं के समाधान में छोटे-छोटे सुखों की आहुति देते हैं। याद रहे, समस्या का समाधान कब मिलेगा, मिलेगा भी या नहीं, पता नहीं परन्तु ये आज की सुंदरता कल नहीं मिलेगी।

स्वीकार कर लें कि दुख अवश्य आएँगे

समस्याएँ आएँगी, जरूर आएँगी और बिना सूचना के आएँगी। जहाँ से कभी सोचा भी नहीं, वहाँ से भी आएँगी। अगर हमें लगता है कि सामने वाला तो हमेशा समस्यामुक्त है तो यह हमारी गलतफहमी है। उसके पास हमारी वाली नहीं तो कोई और तकलीफें होंगी। अनचाहे अतिथि रूपी परेशानियों के लिए खुद को हमेशा तैयार रखना थोड़ा मुश्किल है लेकिन अगर सब कुछ हमारी मनमर्जी से होने लग जाए, फिर तो क्या कहने! लेकिन क्या आज तक हमेशा वही हुआ है, जो हमने चाहा? नहीं। और आगे भी नहीं होगा। इसे मजबूती से स्वीकार कर लेने वाला ही सिकंदर है।

सदैव तैयार रहें

हम अपने घरों में कुछ नमकीन, कुछ मीठा हमेशा रखते हैं ताकि अचानक कोई आ जाए तो हमें उसकी आवभगत के लिए बाजार में न दौड़ना पड़े। अचानक आने वाली समस्याओं में भी मन हलचल में ना आकर, हल खोजे उसका एक ही उपाय है, बढ़िया तैयारी। तैयारी का अर्थ, धन संचय नहीं है। तैयारी का अर्थ है मन को तैयार रखना क्योंकि मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। एक शक्तिशाली मन अकेला ही सैकड़ों तूफानों का सामना कर सकता है और निर्बल मन सब सुख-सुविधाएँ होते हुए भी विफल हो जाता है।

विश्वास रखें स्वयं पर, ईश्वर पर

जिस प्रकार रीढ़ की हड्डी के बिना, चाहे कितना ही खूबसूरत शरीर हो, खड़ा नहीं हो सकता, ठीक उसी तरह, बिना विश्वास के सब प्रयास व्यर्थ हैं। अपने प्रयासों को सटीक और मन को इतना शक्तिशाली बनाएँ कि विफलता का विचार पास से भी गुजरने न पाए। भरोसा भी दो तरह का होता है। एक, अपने पर, अपनी प्रतिभा पर, अपनी ईमानदार कार्यप्रणाली पर और दूसरा, उस परमात्मा पर। वह पिता मुझे मेरी कोशिशों का सुफल जरूर-जरूर देगा। वह सब देख रहा है। वह सब जानता है, उसका प्रेम सदैव मेरे साथ है। मैंने किसी के साथ कभी गलत नहीं किया तो मेरा पिता भी मेरे साथ गलत नहीं होने देगा। वह मेरा मान हमेशा रखेगा। वह ही मेरी इज्जत का रखवाला है। अपना सब छोड़ दो उस पर और

कर्म करते रहो ईमानदारी से।

विश्वास रखो कि अगर कुछ नहीं मिला तो उसमें भी कुछ भलाई होगी क्योंकि पिता गलत कर ही नहीं सकता। 'गलत' शब्द उसके शब्दकोष में नहीं है। पिता बच्चे का सिर्फ और सिर्फ भला ही करता है। तभी सरलता से सब कर पाओगे नहीं तो किन्तु, परन्तु, यदि, तो, फिर, कैसे, क्या, क्यों...में ही जीवन बीत जाएगा। हमें अगले क्षण का पता नहीं, पिछले क्षण को हम किसी भी कीमत पर वापिस नहीं ला सकते तो इतने तनाव का क्या लाभ? इस क्षण को पूरी तन्मयता से जी लो, इस क्षण का कोई कार्य छूट न जाए, कोई कल पर न छूटे...आज भी नहीं, अभी। सिर्फ ये 'अभी' ही हमारे साथ में है। ये यूँही न जाने पाए। विश्वास रखें कि यदि अगला पल हमारा है तो शत-प्रतिशत अच्छा ही होगा क्योंकि इस अगले पल में, हमारे पिछले पल की मेहनत है, ईश्वर का आशीर्वाद है और हमारा दृढ़ विश्वास है। ■■■

धर्म, कर्म और भाग्य

■■■ ब्रह्माकुमारी उषा, जटही पोखरा, छपरा (बिहार)

धर्म, कर्म और भाग्य में गहरा सम्बन्ध है। अगर अविनाशी धर्म में टिक कर हम कोई भी कर्म करते हैं तो हमारा भाग्य अवश्य बनता है। प्रश्न यह है कि हमारा अविनाशी धर्म क्या है? हमारे पिता परमात्मा का जो धर्म है, वही हमारा भी है। परमात्मा पिता शान्ति के सागर हैं, तो शान्ति हमारा धर्म है। वे प्रेम के सागर हैं तो प्रेम हमारा धर्म है। हम आत्मा, परमात्मा पिता की संतान हैं तो कर्म करते समय हमें यह याद आना चाहिए कि मेरे पिता विश्व-कल्याणकारी, रहम के सागर और परोपकारी हैं। उनकी संतान होने के कारण मेरे भी यही गुण हैं। अतः हम विश्व कल्याणकारी, रहमदिल और परोपकारी भावना से कर्म करें। इस अवस्था में जो कर्म होगा वह श्रेष्ठ होगा जिससे हमारा भाग्य बनेगा और हम सुखी होंगे।

अगर बदला लेने की भावना से, ईर्ष्या की भावना से, ठगने की भावना से, किसी को नीचा दिखाने की भावना से, अहंकार के वशीभूत होकर कर्म करते हैं तो हमारा विकर्म बनता है, इससे हमारा भाग्य बिगड़ता है और हम दुख पाते हैं। सुख या दुख के कर्म रूपी बीज हम खुद बोते हैं। सुख का फल खाकर खुश होते हैं और दुख का फल खाकर चिल्लाना शुरू कर देते हैं लेकिन धर्म में टिक कर कर्म करें तो चिल्लाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

सुख या दुख किसी व्यक्ति विशेष को निमित्त बनाकर हमारे पास आते हैं। जिस व्यक्ति के द्वारा सुख मिलता है तो उसके प्रति भावविभोर हो हम फूले नहीं समाते हैं। उसे अपना हितैषी समझ कर भरपूर आदर-सत्कार देने लग पड़ते हैं। सबके आगे उसकी प्रशंसा करते थकते नहीं हैं। कर्मफल का ज्ञान न होने के कारण हमसे यह भूल हो जाती है कि यह सुख तो मेरे ही कर्मों का फल है। सुखी व्यक्ति का मान समाज में बढ़ जाता है। उसके अनेक प्रेमी और सहयोगी हो जाते हैं। एक श्रेष्ठ कर्म हजार गुणा होकर उसका साथ देने लगता है।

लेकिन, जब विकर्मों के कारण दुख का फल किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्राप्त होता है तो उसको हम महाशत्रु मान बैठते हैं। शिकायतें करना शुरू कर देते हैं। तरह-तरह से उसे हानि पहुँचाने की ताक में लगे रहते हैं। उस व्यक्ति को देखते ही क्रोधाग्नि भड़क उठती है। इससे पाप का खाता बढ़ता जाता है क्योंकि इस अवस्था में आत्मा अपने अविनाशी धर्म को भूल कर्म करती है। वह यह भूल जाती है कि यह दुख तो मेरे ही कर्मों का फल है। अतः सुख देने वाले व्यक्ति के प्रति भावविभोर नहीं होना चाहिए और दुख देने वाले के प्रति क्रोध न रख, उसे क्षमा कर देना चाहिए। ■■■

1.जोमसोम (नेपाल)- गण्डकी प्रदेश के आर्थिक मामला तथा योजना मंत्री भ्राता किरण गुरुंग को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शान्ति बहन। साथ में हैं ब्र.कु.भूपेन्द्र भाई तथा ब्र.कु.कृष्ण भाई। **2.आनन्द (सर्चलाइट)**- श्रीसत्यनारायण कथा कार्यक्रम में मंचासीन हैं लायन्स क्लब अध्यक्ष भ्राता भरत सिंह राठौड, ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा ब्र.कु.गीता बहन। **3.आगरा (म्यूजियम)**- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस में विशेष योगदान के लिए जिलाधिकारी भ्राता एन.जी.राव, मुख्य विकास अधिकारी भ्राता नरेन्द्र कुमार, मेयर भ्राता नवीन जैन प्रशस्ती पत्र देकर ब्र.कु.मधु बहन तथा ब्र.कु.माला बहन को सम्मानित करते हुए। **4.नोयडा (सेक्टर 26)**- 'आध्यात्मिक स्वास्थ्य' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुदेश बहन, भ्राता ई.वी.गिरीश, सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल भ्राता तेजपाल तथा अन्य। **5.हाथरस (आनन्दपुरी)**- मेरा भारत, हरित भारत अभियान कार्यक्रम का शुभारम्भ पौधारोपण करके करते हुए उपजिलाधिकारी भ्राता नीतीश कुमार, ब्र.कु.शान्ता बहन, गजेन्द्र पौरुष तथा अन्य। **6.आगरा (शमसाबाद)**- वृक्षारोपण करते हुए नगराध्यक्ष भ्राता प्रमोद गुप्ता, नगरमंत्री भ्राता महेश कुशवाह, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य। **7.बरेली (सिविल लाइन्स)**- आठवीं वाहिनी पी.ए.सी.में नशामुक्ति कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.नीता बहन। मंचासीन हैं कमान्डेंट भ्राता विकास वैद्य तथा अन्य। **8.आगरा (सिकन्दरा)**- वृक्षारोपण कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में हैं मेयर भ्राता नवीन जैन, पार्षद बहन सुषमा जी, ब्र.कु.सरिता बहन तथा ब्र.कु.गीता बहन।

1.राजकोट (न्यू जागनाथ)- ब्र.कु.भगवती बहन को सम्मानित करते हुए स्वामी नीलकण्ठेश्वर जी। **2.अल्मोड़ा**- जिलाधीश भ्राता नितिन भादुरिया, एस.डी.एम.भ्राता नरेन्द्र सिंह भण्डारी, सी.डी.ओ.भ्राता मनोज गोयल तथा दिल्ली से लद्दाख तक मोटर साइकिल से यात्रा करने वाली बहन उज्ज्वला सती को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.नीलम बहन उनके साथ। **3.मऊ**- कृषि उपनिदेशक भ्राता एस.पी.श्रीवास्तव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला बहन। साथ में ब्र.कु.कोमल भाई। **4.दिल्ली (लोधी रोड)**- एन.टी.पी.सी., भारत सरकार की महारत्न कंपनी में 'मेडिटेशन से सुस्वास्थ्य' विषयक संगोष्ठी कराते हुए ब्र.कु.पीयूष भाई। **5.बरेली (चौपुला रोड)**- कोकाकोला कंपनी में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.प्रभाती बहन। **6.हरदोई**- संवेदना संस्था के उपाध्यक्ष डॉ.नरेशचन्द्र शुक्ल व बालकृष्ण गुप्त, ब्र.कु.रोशनी बहन को स्मृति चिह्न व सम्मान पत्र भेंट करते हुए। **7.दिल्ली (पीतमपुरा)**- वरिष्ठजन सम्मान कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.मोहित गुप्ता, टी.आर.सी.टी.सी.के प्रबन्ध निदेशक, ब्र.कु.प्रभा बहन तथा अन्य। **8.भरूच (वालिया)**- मनमैत्री सेवा फाउन्डेशन तथा रोटरी क्लब द्वारा आयोजित कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में हैं मेहमान और ब्र.कु.सुनीला बहन तथा ब्र.कु.हेमा बहन।

अब जीवन में कोई विघ्न नहीं है

■■■ ब्रह्माकुमार मुसाफिर, गाँव जगदीश बरारी, बिहार

मैं पिछले 25 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में युगल सहित चल रहा हूँ। ज्ञान में आने के पश्चात् खुशी और आनंद की जो अनुभूति हुई है उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। शिवबाबा की शक्तियाँ मुझे पग-पग पर मिल रही हैं। बाबा ने मेरा जीवन पशुतुल्य से देवतुल्य बना दिया है। मैं बाबा की कृपा से अतीन्द्रिय आनंद के झूले में झूलता रहता हूँ।

प्रतिवर्ष युगल व बच्चों के साथ प्यारे बाबा से मिलन मनाने मैं मधुबन जाता हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले धन ज्यादा कमाता था मगर सुख व शान्ति जीवन में नहीं थे। घर में हर बात में विघ्न पड़ता रहता था। अब धन कम कमाता हूँ, सब्जी बेचता हूँ, फिर भी पहले से ज्यादा सुख व शान्ति में हूँ। घर में गीता पाठशाला चलती है तथा बाबा के हर कार्य में सहयोगी हूँ। अब किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं है। बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो गये हैं। गीता पाठशाला के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान में चलने वाले सभी भाई-बहनें मुझे दुआएँ देते हैं। अब घर मंदिर बन गया है। घर में प्रतिदिन प्यारे बाबा को भोग लगता है, उसे प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं जिसके कारण शरीर में कोई बीमारी नहीं है, मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। अब पूरा जीवन बाबा के लिए समर्पित है। जहाँ आवश्यकता होती है वहाँ बाबा के ज्ञान को बाँटता हूँ तथा इस कलियुगी दुनिया को सतयुग में परिवर्तित करने में बाबा के कार्य में सहयोग दे रहा हूँ। मैं बाबा का बारम्बार शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने मुझे अपना बच्चा बनाया और मेरे जीवन को बदल दिया। ■■■

ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों से भरपूर अनेक मनभावन राखियाँ ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं। स्नेही प्रेषक बहनों को हार्दिक आभार और दिल की दुआयें!

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

1. रांची : ब्र.कु. निर्मला बहन, झारखण्ड की महामहिम राज्यपाल बहन द्रौपदी मुर्मू जी को राखी बांधती हुई। **2. इम्फाल** : ब्र.कु. नीलिमा बहन, मणिपुर की महामहिम राज्यपाल बहन नज़मा हेपतुल्ला जी को राखी का सन्देश देती हुई। **3. चण्डीगढ़:** ब्र.कु. उत्तरा बहन, पंजाब के महामहिम राज्यपाल भ्राता वी.पी. सिंह बदनोर जी को राखी बांधती हुई। **4. पांडिचेरी:** ब्र.कु. कविता बहन, पांडिचेरी की उपराज्यपाल बहन किरण बेदी जी को राखी बांधती हुई। **5. जयपुर:** ब्र.कु. सुषमा बहन, राजस्थान के मुख्यमंत्री भ्राता अशोक गहलोत जी को राखी बांधती हुई। **6. अहमदाबाद:** ब्र.कु. भारती बहन, गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता विजय भाई रुपाणी जी को राखी बांधती हुई। **7. भुवनेश्वर:** ब्र.कु. गीता बहन, उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक जी को राखी बांधती हुई। **8.सोनीपत :** ब्र.कु. रामदेवी बहन, हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर जी को आत्मस्मृति का तिलक लगाती हुई। **9. बैंगलोर:** ब्र.कु. पदमा बहन, कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता येदियुरप्पा जी को राखी बांधती हुई। **10. देहरादून** : ब्र.कु. ऊषा बहन, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री भ्राता त्रिवेंद्र सिंह रावत जी को राखी बांधती हुई। **11.नामची** : ब्र.कु. सकून एवं सरिता बहन, सिक्किम के मुख्यमंत्री भ्राता पी.एस.गोले एवं उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद उनके साथ ग्रुप फोटो में। **12. जयपुर:** ब्र.कु. निर्मला बहन, राजस्थान के उपमुख्यमंत्री भ्राता सचिन पायलट जी को राखी बांधती हुई।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : September, 2019.

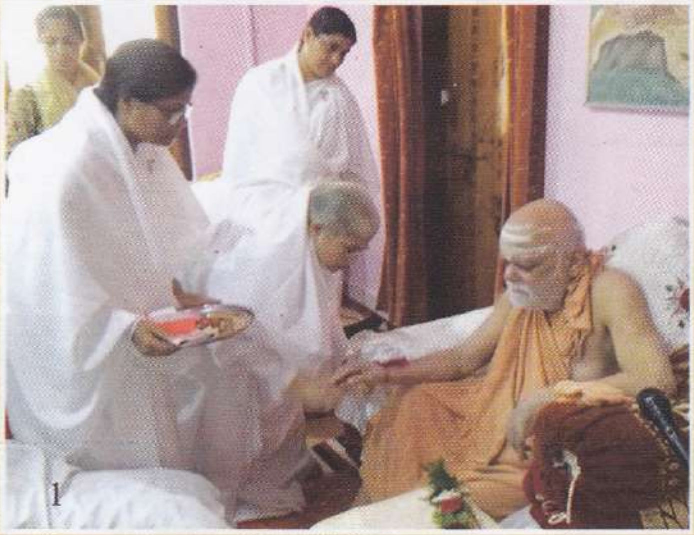

1.जगन्नाथ पुरी : पुरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. प्रतिमा बहन। **2 हरिद्वार** : महामण्डलेश्वर स्वामी देवानन्द सरस्वती जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. ऊषा बहन। **3. काठमाण्डू** : नेपाल की महामहिम राष्ट्रपति बहन विद्यादेवी भण्डारी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. राज बहन। **4. कोटा** : लोकसभा अध्यक्ष भ्राता ओम बिड़ला जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. उर्मिला बहन। **5. काठमाण्डू** : नेपाल के माननीय प्रधानमंत्री भ्राता खड़गप्रसाद शर्मा ओली जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. राज बहन। **6. दिल्ली (इन्द्रपुरी)**: अल्पसंख्यक मामलों के केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री भ्राता मुख्तार अब्बास नक़वी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. गायत्री बहन।